पु॰ना International School
Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

***-अनुच्छेद :-**

1) समय किसी के लिए नहीं रुकता

'समय' निरंतर बीतता रहता है, कभी किसी के लिए नहीं ठहरता। जो व्यक्ति समय के मोल को पहचानता है, वह अपने जीवन में सफलता प्राप्त करता है। समय बीत जाने पर किए गए कार्य का कोई फल प्राप्त नहीं होता और पश्चाताप के अतिरिक्त कुछ हाथ नहीं आता। जो विद्यार्थी सुबह समय पर उठता है, अपने दैनिक कार्य समय पर करता है तथा समय पर सोता है, वही आगे चलकर सफल व उन्नत व्यक्ति बन पाता है। जो व्यक्ति आलस में आकर समय गँवा देता है, उसका भविष्य अंधकारमय हो जाता है। संतकवि कबीरदास जी ने भी अपने दोहे में कहा है -

"काल करै सो आज कर, आज करै सो अब।
पल में परलै होइगी, बहुरि करेगा कब।।"

समय का एक-एक पल बहुत मूल्यवान है और बीता हुआ पल वापस लौटकर नहीं आता। इसलिए समय का महत्व पहचानकर प्रत्येक विद्यार्थी को नियमित रूप से अध्ययन करना चाहिए और अपने लक्ष्य की प्राप्ति करनी चाहिए। जो समय बीत गया उस पर वर्तमान समय में सोच कर और अधिक समय बरबाद न करके आगे अपने कार्य पर विचार कर-लेना ही बुद्धिमानी है।

(2) अभ्यास का महत्त्व

यदि निरंतर अभ्यास किया जाए, तो किसी भी कठिन कार्य को किया जा सकता है। ईश्वर ने सभी मनुष्यों को बुद्धि दी है। उस बुद्धि का इस्तेमाल तथा अभ्यास करके मनुष्य कुछ भी सीख सकता है। अर्जुन तथा एकलव्य ने निरंतर अभ्यास करके धनुर्विद्या में निपुणता प्राप्त

की। उसी प्रकार वरदराज ने, जो कि एक मंदबुद्धि बालक था, निरंतर अभ्यास द्वारा विद्या प्राप्त की और ग्रंथों की रचना की। उन्हीं पर एक प्रसिद्ध कहावत बनी -

"करत-करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।
रसरि आवत जात तें, सिल पर परत निसान।।"

यानी जिस प्रकार रस्सी की रगड़ से कठोर पत्थर पर भी निशान बन जाते हैं, उसी प्रकार निरंतर अभ्यास से मूर्ख व्यक्ति भी विद्वान बन सकता है। यदि विद्यार्थी प्रत्येक विषय का निरंतर अभ्यास करें, तो उन्हें कोई भी विषय कठिन नहीं लगेगा और वे सरलता से उस विषय में कुशलता प्राप्त कर सकेंगे।

कहा भी गया है कि,"परिश्रम ही सफलता की कुँजी है।"

(3)वन और पर्यावरण का सम्बन्ध

संकेत-बिंदु -

वन प्रदुषण-निवारण में सहायक,
वनों की उपयोगिता,
वन संरक्षण की आवश्यकता,
वन संरक्षण के उपाय।

वन और पर्यावरण का बहुत गहरा सम्बन्ध है। प्रकृति के संतुलन को बनाये रखने के लिए पृथ्वी के 33% भाग को अवश्य हरा-भरा होना चाहिए। वन जीवनदायक हैं। ये वर्षा कराने में सहायक होते हैं। धरती की उपजाऊ शक्ति को बढ़ाते हैं। वनों से भूमि का कटाव रोका जा सकता है। वनों से रेगिस्तान का फैलाव रुकता है, सूखा कम पड़ता है। इससे ध्वनि प्रदुषण की भयंकर समस्या से भी काफी हद तक नियंत्रण पाया जा सकता है। वन ही नदियों, झरनों और अन्य प्राकृतिक जल स्रोतों के भण्डार हैं। वनों से हमें लकड़ी, फल, फूल, खाद्य पदार्थ, गोंद तथा अन्य सामान प्राप्त होते हैं। आज भारत में दुर्भाग्य से केवल 23 % वन बचे हैं। जैसे-जैसे उद्योगों को संख्या बढ़ रही है, शहरीकरण हो रहा है, वाहनों की संख्या बढ़ती जा रही है, वैसे-वैसे वनों की आवश्यकता और बढ़ती जा रही है। वन संरक्षण एक कठिन एवं महत्वपूर्ण काम है। इसमें हर व्यक्ति को अपनी जिम्मेदारी समझनी पड़ेगी और अपना योगदान देना होगा। अपने घर-मोहल्ले,

नगर में अत्यधिक संख्या में वृक्षारोपण को बढाकर इसको एक आंदोलन के रूप में आगे बढ़ाना होगा। तभी हम अपने पर्यावरण को स्वच्छ रख पाएँगे।

(4) कम्प्यूटर एक जादुई पिटारा

आज का युग विज्ञान का युग है। वर्तमान समय में विज्ञान ने हमें कम्प्यूटर के रूप में एक अनमोल उपहार दिया है। आज जीवन के हर क्षेत्र में कम्प्यूटर का उपयोग हो रहा है। जो काम मनुष्य द्वारा पहले बड़ी कठिनाई के साथ किया जाता था, आज वही काम कम्प्यूटर द्वारा बड़े ही आराम से किये जा रहे हैं। कंप्यूटर का उपयोग दिनो-दिन बढ़ता जा रहा है। कम्प्यूटर ने दुनिया को बहुत छोटा कर दिया है। इंटरनेट द्वारा गूगल, याहू एवं बिंग आदि वेबसाइट पर दुनियाभर की जानकारी घर बैठे ही प्राप्त की जा सकती है। इंटरनेट पर ई-मेल के द्वारा विश्व में किसी भी जगह बैठे व्यक्ति से संपर्क किया जा सकता है। इसके लिए केवल ई-मेल अकाउंट और पासवर्ड का होना आवश्यक होता है। कम्प्यूटर मनोरंजन का भी महत्वपूर्ण साधन है। इस पर अनेक खेल भी खेले जा सकते हैं। कुल मिलकर कहें तो कम्प्यूटर ने मानव जीवन को बहुत सरल बना दिया है। कम्प्यूटर सचमुच एक जादुई पिटारा है।

(5) ग्लोबल वार्मिंग

ग्लोबल वार्मिंग शब्द पृथ्वी के तापमान में होने वाली वृद्धि को दर्शाता है। यह एक ऐसी समस्या है जिस पर अगर काबू नहीं किया गया तो यह पूरी पृथ्वी को ही नष्ट कर देगा। सीएफसी-11 और सीएफसी-12 जैसी ग्रीन हाउस गैसों ने सूरज के थर्मल विकिरण को अवशोषित करके पृथ्वी के वातावरण को गर्म बना दिया। ये गैसें सूर्य की किरणों को वायुमंडल में प्रवेश तो करने देती हैं, लेकिन उससे होने वाले विकिरण को वायुमंडल से बाहर नहीं जाने देती हैं। इसी को ग्रीनहाउस प्रभाव कहा जाता है, जो पूरे विश्व में तापमान में वृद्धि के लिए जिम्मेदार है। तापमान में वृद्धि से वर्षा चक्र, पारिस्थितिक संतुलन, मौसम का चक्र आदि प्रभावित होते हैं। यह वनस्पति और कृषि को भी प्रभावित करता है। जिसके कारण हमें दुनिया भर में लगातार बाढ़ और सूखे जैसी परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। तापमान में वृद्धि और ग्लेशियरों के पिघलने के कारण बर्फ़बारी जैसी घटनाओं में भी कमी आयी है। तापमान में वृद्धि से आद्रता में भी वृद्धि हुई है क्योंकि तापमान में वृद्धि से वाष्पीकरण की दर में वृद्धि हुई है। स्थानीय

सरकारों को चाहिए की वह लोगों के बीच जागरूकता पैदा करे तथा ऐसे उपकरणों और वाहनों की बिक्री को प्रोत्साहित करे जो पर्यावरण के अनुकूल हो। पेपर, प्लास्टिक और अन्य सामग्रियों की रीसाइक्लिंग को प्रोत्साहित करना चाहिए। ऐसे प्रयासों को लोगों द्वारा जमीनी स्तर पर करना अत्यंत आवश्यक है, तभी हम एक प्रभावी तरीके से इस भयानक समस्या का मुकाबला कर सकते हैं।

***-पत्र-लेखन :-**

1 . भविष्य में दसवीं के बाद क्या करना चाहते हैं। इससे अवगत कराते हुए अपने मामा जी को पत्र लिखिए।

महाराणा प्रताप छात्रावास
जयपुर, राजस्थान
15 मार्च 20XX
पूज्य मामा जी
सादर प्रणाम!

मैं छात्रावास में सकुशल रहकर आशा करता हूँ कि आप भी परिवार के साथ आनंद-मंगल से होंगे। मैं ईश्वर से यही कामना भी करता हूँ। इस पत्र के माध्यम से मैं अपनी भविष्य की योजनाओं के बारे में बताना चाहता हूँ। मामा जी मेरी वार्षिक परीक्षा समाप्त होने को है। अब तक मेरे सभी प्रश्नपत्र बहुत अच्छे हुए हैं। मैं दसवीं के बाद आगे की पढ़ाई विज्ञान वर्ग से करना चाहता हूँ। मैं सभी विषयों पर ध्यान देने के साथ जीवविज्ञान विषय पर विशेष ध्यान देना चाहता हूँ। मेरा सारा ध्यान अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित होने वाली परीक्षा मेडिकल प्रवेश परीक्षा की तैयारी की ओर लगा हुआ है। मैं अथक परिश्रम से इसमें सफल होकर एम.बी.बी.एस. करना चाहता हूँ। मैं डॉक्टर बनकर गरीबों की सेवा करना चाहता हूँ। इसके लिए ईश्वर की कृपा और आपके आशीर्वाद की आवश्यकता है।

मामा जी को मेरा प्रणाम और शिल्पी को स्नेह कहना। शेष सब कुशल है। पत्रोत्तर की प्रतीक्षा में,
आपका भांजा

2)आप लंबी दौड़ प्रतियोगिता में राज्य स्तर पर प्रथम आए हैं। राज्य सरकार द्वारा आयोजित कार्यक्रम में आपको मुख्यमंत्री के हाथों पुरस्कृत किया जाना है। इस कार्यक्रम में शामिल होने के लिए अपने दादा जी को पत्र लिखिए।
उत्तर:

बिरसा मुंडा छात्रावास
राँची, झारखंड
20 नवंबर 20XX
पूज्य दादा जी
सादर चरण स्पर्श!

मैं यहाँ सकुशल रहकर आपकी कुशलता की कामना किया करता हूँ।

दादा जी, आपको यह जानकर अत्यंत हर्ष होगा कि कल 19 नवंबर आयोजित प्रदेश स्तरीय दौड़ प्रतियोगिता में मैंने भी भाग लिया था। आपके आशीर्वाद से इसमें मैंने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस उपलब्धि पर मैं भी गर्व एवं रोमांच का अनुभव कर रहा है। राज्य सरकार द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम एवं द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को मुख्यमंत्री के हाथों पुरस्कृत किया जाएगा। मेरी हार्दिक इच्छा है कि इस कार्यक्रम में आप भी उपस्थित रहें और मुझे पुरस्कृत होता हुआ देखें। इसका आयोजन 30 नवंबर को राँची में किया जाएगा।

दादी जी को चरण स्पर्श कहना। शेष कुशल है। आपके आने की प्रतीक्षा में
आपका पौत्र
रंजन टेटे

3). आप स्वामी विवेकानंद छात्रावास, जयपुर रोड कोटा, राजस्थान के छात्र हैं। नए सत्र की तैयारी हेतु आपको कुछ रुपयों की आवश्यकता है। रुपये मँगवाने के लिए अपने पिता जी को पत्र लिखिए।

स्वामी विवेकानंद छात्रावास
जयपुर रोड, कोटा
राजस्थान
03 अप्रैल, 20XX
पूज्य पिता जी
सादर चरण स्पर्श

आपका पत्र मिला। यह पढ़कर बड़ी खुशी हुई कि आप सभी आनंदपूर्वक जीवन बिता रहे हैं। मैं भी यहाँ स्वस्थ एवं प्रसन्न हूँ। पिता जी! यह जानकर आपको अत्यंत हर्ष होगा कि 31 मार्च को नौवीं कक्षा का परीक्षा परिणाम घोषित कर दिया गया, जिसमें 85% अंक प्राप्त हुए हैं। अब नए सत्र की पढ़ाई 07 अप्रैल से शुरू होनी है। इसके लिए मुझे पुस्तकें और कापियाँ खरीदनी हैं। मुझे छात्रावास की फ़ीस भी जमा करानी है। इसके अलावा दसवीं कक्षा की तीन महीने की फ़ीस भी जमा करवानी है। इन सब कामों के लिए मुझे 5000 रु. की आवश्यकता है। आप इन्हें शीघ्र भिजवा दीजिए ताकि मैं नए सत्र की तैयारी समय से करके अपनी पढ़ाई-लिखाई शुरू कर सकूँ।

पूज्या माता जी को चरण स्पर्श एवं शैली को स्नेह। पत्र का जवाब शीघ्र देना।

आपका प्रिय पुत्र
अर्पित

4) पढ़ाई के लिए लैपटॉप और इंटरनेट की उपयोगिता बताते हुए इसे खरीदने का अनुरोध करते हुए अपने पिता जी को पत्र लिखिए।

मानसरोवर छात्रावास
मानसरोवर गार्डेन, दिल्ली।
10 अगस्त, 20XX
पूज्य पिता जी
सादर चरण स्पर्श!

मैं सकुशल रहकर आशा करता हूँ कि आप भी सकुशल होंगे और मैं ईश्वर से यही कामना भी करता हूँ।

पिता जी, आगामी महीने में हमारी मिड टर्म परीक्षा होनी है। इसे देखते हुए अत्यंत जोर-शोर से पढ़ाई कराई जा रही है। विभिन्न विषयों के पाठ पढ़ाते हुए गृहकार्य दिए जा रहे हैं तथा प्रोजेक्ट वर्क भी करवाए जा रहे हैं। प्रोजेक्ट के लिए आवश्यक सामग्री ढूँढ़ने के लिए कैफे में काफ़ी समय नष्ट करना पड़ता है। इससे पढ़ाए गए पाठों को दोहराने का समय ही नहीं मिल पाता है तथा कभी-कभी तो गृहकार्य तक अधूरा रह जाता है। जिन बच्चों के पास कंप्यूटर या इंटरनेट है, वे अपने सभी काम शीघ्रता से कर लेते हैं। इतना ही नहीं कई छात्र पी.डी.एफ. के रूप में पाठ्यपुस्तकों को लैपटॉप में डाउनलोड कर रखा है। इससे उनके बस्ते का बोझ कम हो गया है। इसके अलावा लैपटॉप अन्य शैक्षिक कार्यों में बहुत उपयोगी एवं सहायक है। मैं भी एक लैपटॉप की आवश्यकता महसूस कर रहा हूँ। मैं चाहता हूँ कि आप मेरे लिए भी एक लैपटॉप खरीदने का कष्ट करें।

पूज्या माता जी को चरण स्पर्श तथा सुरभि को स्नेह। पत्रोत्तर की प्रतीक्षा में,

आपका प्रिय पुत्र
सौरभ कुमार

1.बस में छुटे सामान के बारे में परिवहन अधिकारी को सूचना पत्र

सेवा में ,

प्रबंधक महोदय,

हिमाचल प्रदेश परिवहन निगम,

शिमला 171001.

विषय: बस में छुटे सामान के बारे में

महोदय,

मेरा नाम मीना शर्मा है| मैं 2-03-2019 को शिमला से सोलन जाने वाली बस से सोलन गई थी| बस का नंबर H.P 37 F 16290. यह शिमला से 11 बज़े चलती है और 1 बज़े सोलन पहुंचती है |

उस दिन जल्दी में मेरा बैग रह गया उसमें मेरे जरूरी कागज़ थे जो उस बैग में है | यह जरूरी कागज़ मुझें आगे बहुत काम आने है इनका मिलना बहुत जरूरी है | आपसे निवेदन है की आप मेरे सामान का पता लगायें| यह मेरा नंबर 232323232 है | सामान मिलने पे मुझे इस नंबर पे बताये आपकी महान कृपा होगी|

सधन्यबाद .

भवदीय,

मीना शर्मा

सी.पी.आर.आई

शिमला.

2. दुर्घटनाग्रस्त होने पर अवकाश माँगते हुए प्रधानाचार्य जी को प्रार्थना पत्र लिखिए |

सेवा में ,

प्रधानाचार्य महोदय ,

D.A.V पब्लिक स्कूल,

डाक बंगला रोड, जयपुर ।

विषय: दुर्घटनाग्रस्त होने पर अवकाश माँगते हुए प्रधानाचार्य जी को प्रार्थना पत्र

महोदय,

सविनय निवेदन यह है की में आपके स्कूल में दसवीं ' ए 'कक्षा की छात्रा हूँ. कल स्कूल से घर जाते समय एक गाड़ी वाले ने मुझे टक्कर मार दी और मेरे टांग टूट गई और डॉक्टर ने 25 दिन का प्लास्टर लगा दिया है. डॉक्टर ने विश्राम की सलाह दी है, इसी कारण में स्कूल नहीं आ पाऊँगी अत : आपसे मेरा निवेदन है कि दिनांक 25 दिन अवकाश स्वीकृत किया जाए. उसके लिए मैं आपकी आभारी रहूंगी ।

आपकी आज्ञाकारिणी शिष्या

आरती

कक्षा - दसंवी ' ए '

3. रक्तदान शिविर लगाने की अनुमति हेतु प्रार्थना पत्र।

सेवा मे

उपायुक्त

जिला हमीरपुर

हिमाचल प्रदेश

विषय: रक्तदान शिविर लगाने की अनुमति हेतु प्रार्थना पत्र।

अदरणीय महोदय जी,

विनम्र निवेदन है कि हम हमीरपुर जिला के वार्ड न. 5 में एक रक्तदान शिविर लगाना चाहते हैं। जगह कि कमी कि वजह से इस का आयोजन कहीं नहीं हो पा रहा है। अत: आप से विनम्र निवेदन है कि इस के आयोजन कि आपके परिसर में खाली स्थान में करने कि अनुमति प्रदान करें।

धन्यवाद सहित।

भवदीय

विनय कुमार

अध्यक्ष

समाज कल्याण सभा

हमीरपुर.

4. डाकपाल को डाकिये कि शिकायत करते हुए पत्र

सेवा में,

डाक पाल महोदय,

मुख्य डाकघर,

शिमला.

विषय : डाकपाल को डाकिये कि शिकायत करते हुए पत्र

श्रीमान,

मैं आपका ध्यान अपने इलाके के पोस्टमैन की लापरवाही की ओर अनेक प्रकार की कठिनाइयों के बारे में बताना चाहता हूँ। कुछ सप्ताह से वह पत्रों को बच्चों के हाथों में थमा देता है अथवा गलत लोगों को दे देता। मुझे कुछ पत्र मिलते भी नहीं है। कृपया करके आप सम्बन्धित पोस्टमैन को हिदायत करें कि वह अपने कर्तव्यों का निर्वाह पूरी जिम्मेदारी और गम्भीरता से करें।

सधन्यवाद।

विजय कुमार .

5. घर का पता बदलने की सूचना हेतु पत्र

सेवा में,

श्रीमान् पोस्टमास्टर महोदय,

विषय : घर का पता बदलने की सूचना हेतु पत्र

श्रीमान,

यह आपको सूचित चाहता हु मेरा तबादला शिमला से सोलन हो गया है। ओर मैंने अपना आवासीय पता निम्नानुसार बदल दिया है। मुझे आपके डाक घर के माध्यम से बहुत महत्वपूर्ण पत्र आने है और दस्तावेज जो कि मेरे लिये जरूरी है मुझे इस समय प्रेषकों को अपने नए पते पर मेल भेजने के लिए लिखा गया है। कृपया अपने डाकिया को सलाह दें कि मेरे नए पते पर मेरे सभी पत्र और दस्तावेज पहुंचाएं।

आपको धन्यवाद,

आपका आभार

6-आपके विद्यालय में खेल-कूद के सामान की कमी है जिससे आपके विद्यालय की टीम खेलों में न अच्छा प्रदर्शन कर पा रही है और न कोई पदक जीत पाती है। इस ओर ध्यान आकर्षित कराते हुए अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को प्रार्थना-पत्र लिखिए।

उत्तरः

सेवा में

प्रधानाचार्य महोदय

रा०व०मा० बाल विद्यालय

वाई ब्लॉक मंगोलपुरी, दिल्ली।

28 अक्टूबर, 20XX

विषय-खेलों का नया सामान मँगवाने के संबंध में

महोदय

विनम्र निवेदन यह है कि मैं इस विद्यालय की दसवीं कक्षा का छात्र एवं क्रिकेट टीम का कप्तान हूँ। यहाँ शिक्षण एवं पठन-पाठन की व्यवस्था बहुत अच्छी हैं। विद्यालय का शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम इसका प्रमाण है। यहाँ खेल-कूद का मैदान भी विशाल है, परंतु खेल संबंधी सामान का घोर अभाव है। यहाँ तीन-चार वर्षों से खेलों का नया सामान नहीं खरीदा गया है, जिसमें खिलाड़ी छात्रों को फटी-पुरानी गेंद, फुटबॉल और टूटे बल्ले से अभ्यास करने के लिए विवश होना पड़ता है। इस कारण हमारी तैयारी आधी-अधूरी रह जाती है और हम अपने से कमजोर टीमों से भी हार जाते हैं। मैं निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि हमारे खिलाड़ी छात्रों में प्रतिभा की कमी नहीं है। खेल संबंधी सुविधाएँ मिलते ही वे विद्यालय का नाम रोशन करने में कसर नहीं छोड़ेंगे।

अतः आपसे प्रार्थना है कि हम छात्रों के विद्यालय में विभिन्न खेलों के नए सामान; जैसे-गेंद, बैट, फुटबॉल, वालीबाल, रैकेट, जाली आदि खरीदने की कृपा करें ताकि हम छात्र खेलों में अच्छा प्रदर्शन कर सकें।

सधन्यवाद

आपका आज्ञाकारी शिष्य

प्रत्यूष कुमार

कप्तान क्रिकेट टी

७-आप 29/5 संस्कार अपार्टमेंट, सेक्टर-14 रोहिणी, दिल्ली के निवासी हैं। आप चाहते हैं कि लोग दीपावली में पटाखों का कम से कम प्रयोग करें। पटाखों से होने वाली हानियों से अवगत कराते हुए नवभारत टाइम्स के संपादक को पत्र लिखिए।
उत्तरः

सेवा में
संपादक महोदय
नवभारत टाइम्स
बहादुरशाह जफ़र मार्ग,
नई दिल्ली
विषय-पटाखों से होने वाली हानि से अवगत कराने के संबंध में
महोदय

मैं आपके सम्मानित पत्र के माध्यम से लोगों का ध्यान पटाखों से होने वाली हानियों की ओर आकर्षित कराना चाहता|

खुशियों के विभिन्न मौकों एवं दीपावली के त्योहार पर लोग पटाखों का जमकर प्रयोग करते हैं। बच्चों तथा युवा वर्ग का पटाखों से विशेष लगाव होता है। अपनी खुशी में वे यह भूल जाते हैं कि इनसे पर्यावरण तथा आसपास के लोगों को कितना नुकसान होता है। पटाखों में प्रयुक्त बारूद और फॉस्फोरस के जलने से एक ओर जोरदार धमाका होता है तो दूसरी ओर फॉस्फोरस पेंटा ऑक्साइड गैस उत्सर्जित होती है जो बच्चों और स्वांस के रोगियों के लिए अत्यधिक हानिकारक होती है। इनकी आवाज से ध्वनि प्रदूषण होता है तथा वायुमंडल में वायु प्रदूषकों की मात्रा बढ़ जाती है, जिससे साँस लेने में परेशानी होती है। इसके अलावा पटाखों से पैसों का भी अपव्यय होता है। पटाखों के प्रयोग से बच्चों के जलने की घटनाएँ प्रायः सुनने को मिलती हैं, इसलिए पटाखों का प्रयोग न करें ताकि मनुष्य और पर्यावरण दोनों ही स्वस्थ रहें।

आपसे प्रार्थना है कि जनहित को ध्यान में रखते हुए इसे अपने समाचार पत्र में प्रकाशित करने की कृपा करें ताकि लोग पटाखें और उससे होने वाली हानियों के प्रति सजग हो सकें।

सधन्यवाद
भवदीय
अनुभव वर्मा

29/5 संस्कार अपार्टमेंट
सेक्टर-14 रोहिणी, दिल्ली
03 नवंबर, 20x

***-विज्ञापन :-**

1. आधुनिक सुविधाओं से युक्त किसी मोबाइल फ़ोन का विज्ञापन तैयार कीजिए।

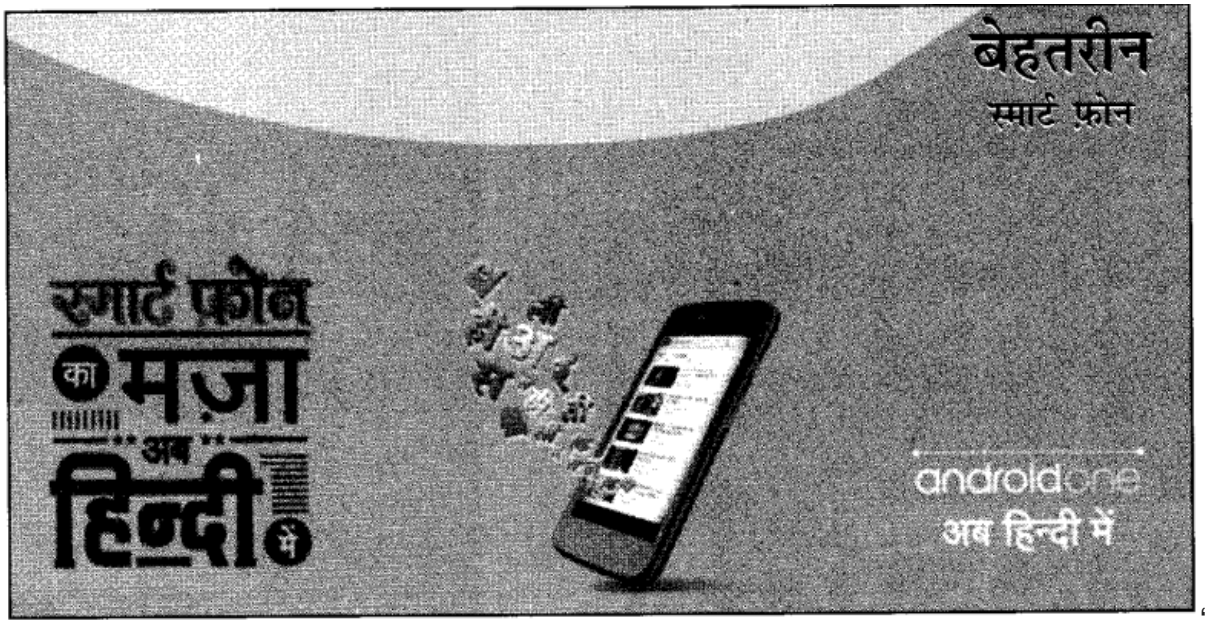

2. रचना पेंसिलों के लिए विज्ञापन तैयार कीजिए।

3. सपना कलमों की बिक्री बढ़ाने हेतु विज्ञापन तैयार कीजिए।

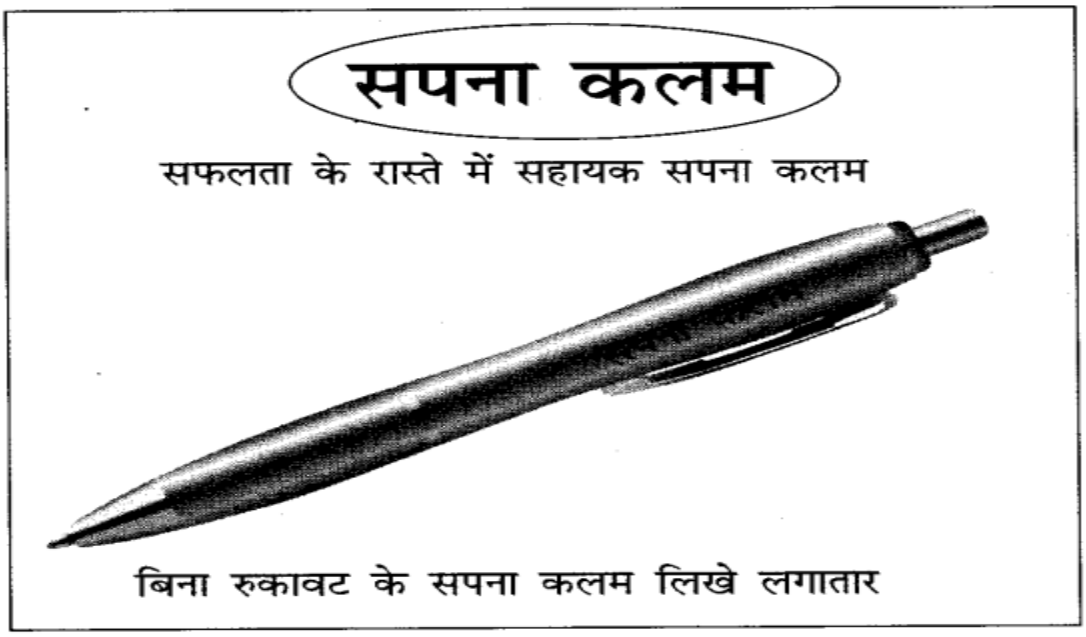

4. मध्य प्रदेश राज्य पर्यटन निगम की ओर से पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

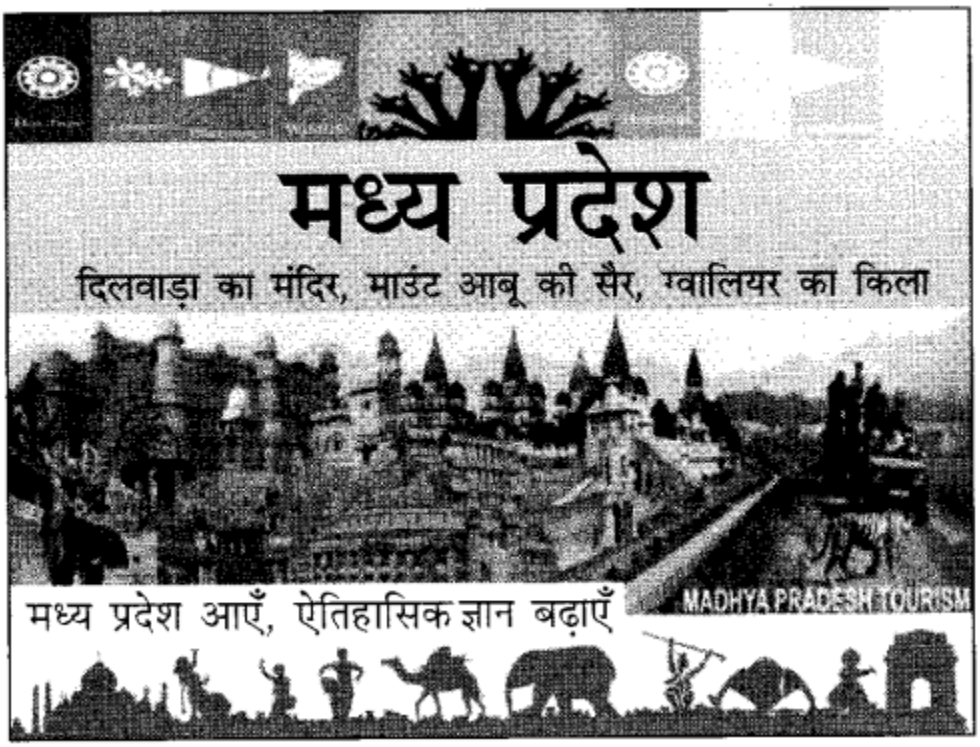

5. राजस्थान पर्यटन निगम की ओर से पर्यटकों को आकर्षित करने हेतु विज्ञापन तैयार कीजिए।

6. उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग की ओर से यात्रियों को आकर्षित करने हेतु एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

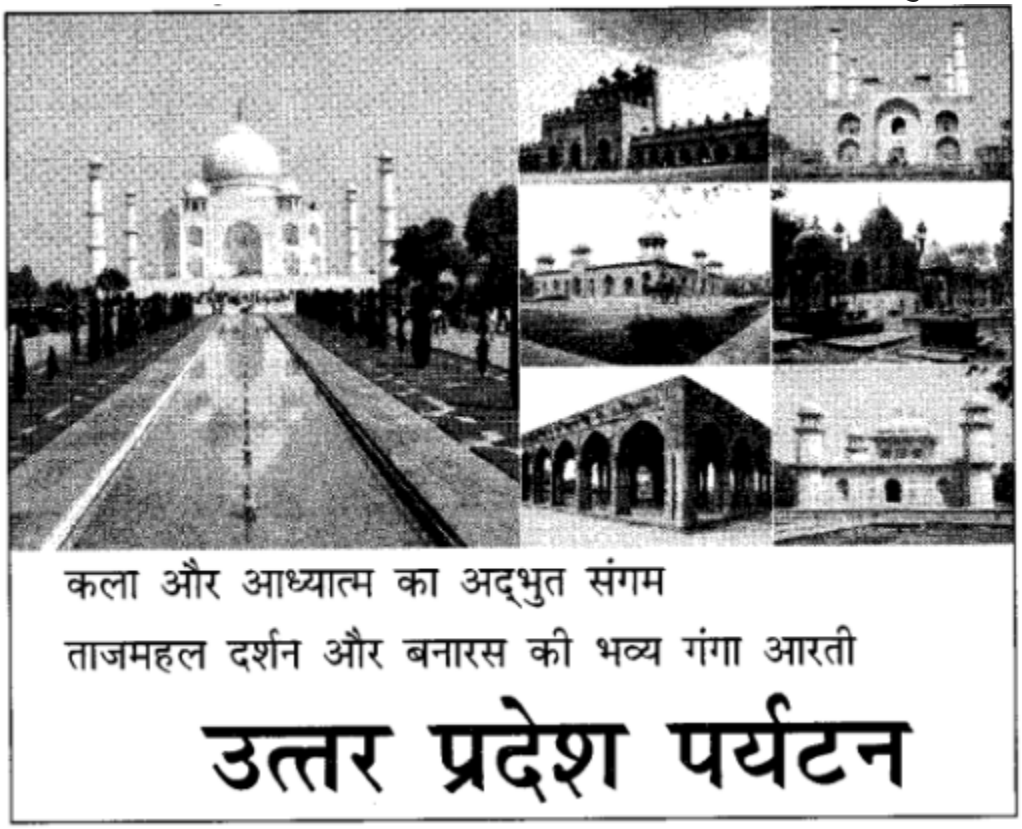

7.

1. आधुनिक सुविधाओं से युक्त किसी मोबाइल फ़ोन का विज्ञापन तैयार कीजिए।

2. रचना पेंसिलों के लिए विज्ञापन तैयार कीजिए।

3. सपना कलमों की बिक्री बढ़ाने हेतु विज्ञापन तैयार कीजिए।

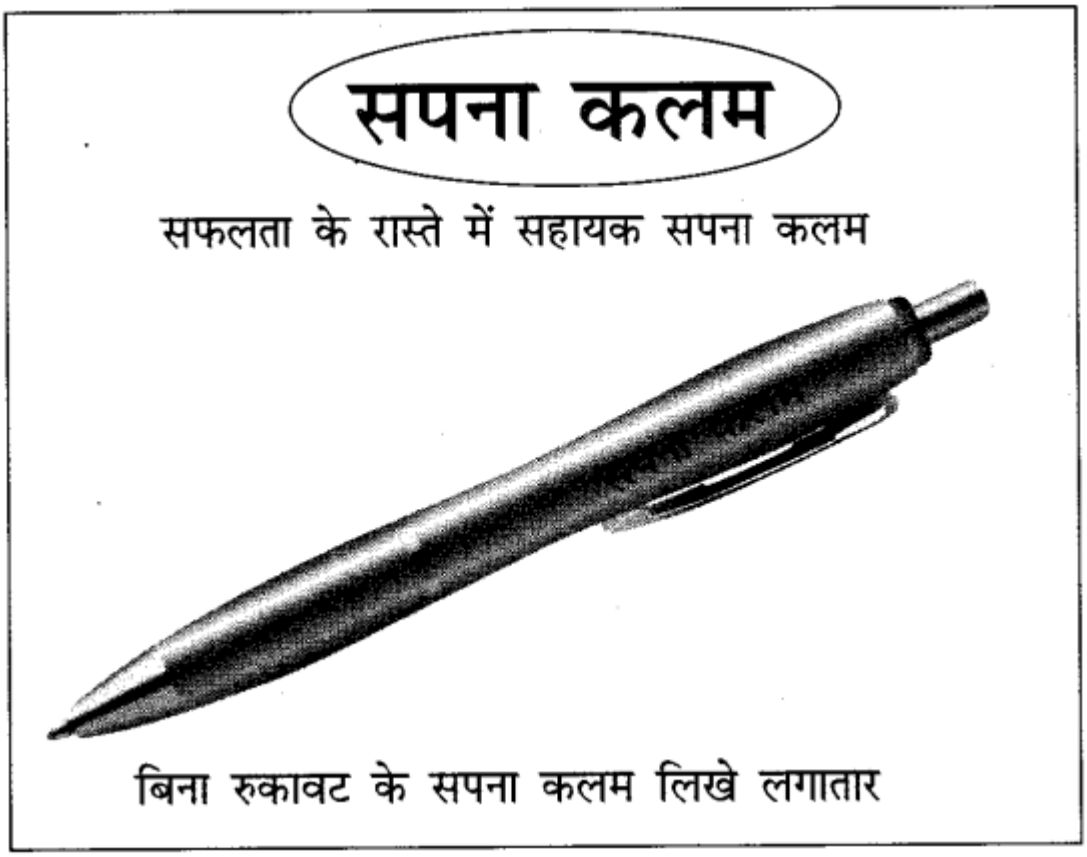

4. मध्य प्रदेश राज्य पर्यटन निगम की ओर से पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

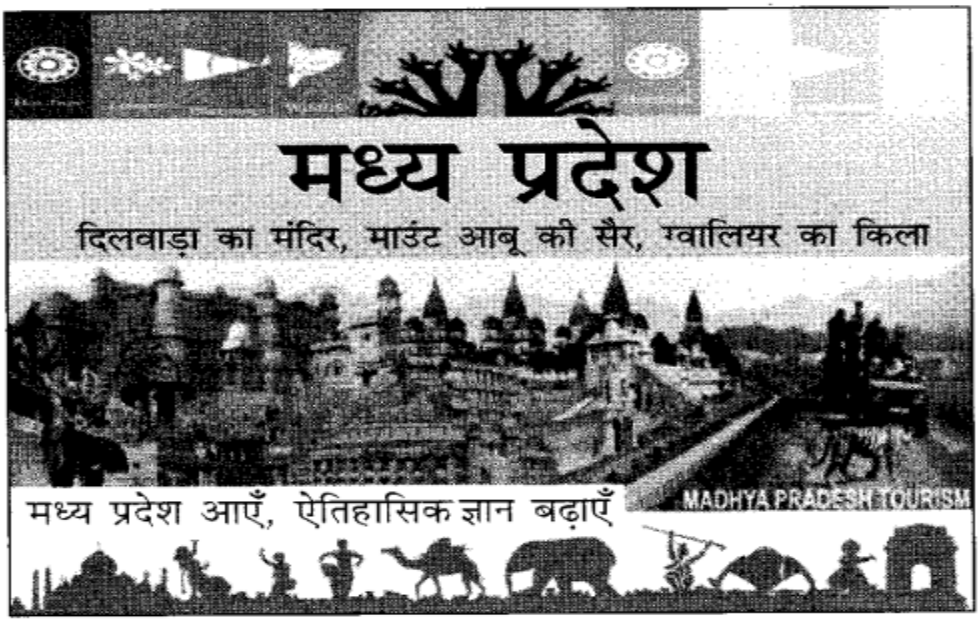

5. राजस्थान पर्यटन निगम की ओर से पर्यटकों को आकर्षित करने हेतु विज्ञापन तैयार कीजिए।

6. उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग की ओर से यात्रियों को आकर्षित करने हेतु एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

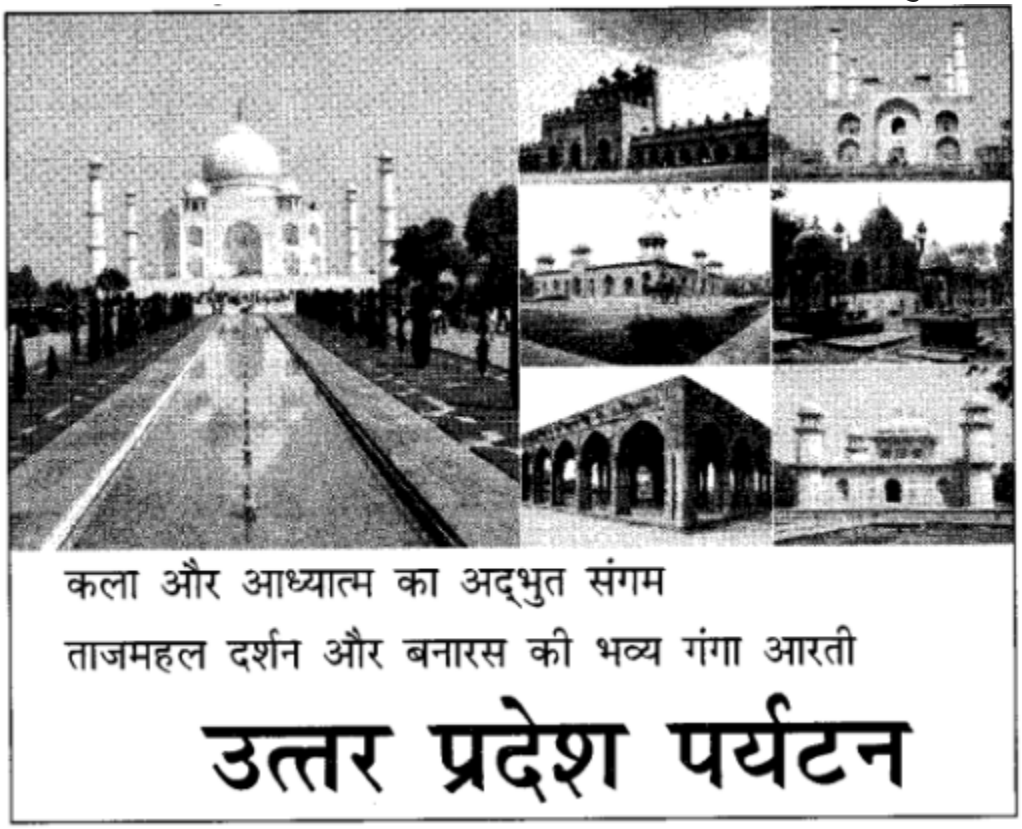

7.

. शिक्षार्थी कोचिंग सेंटर के लिए एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

*-संवाद-लेखन:-

प्रश्नः 1.

आजकल महँगाई बढ़ती ही जा रही है। इससे परेशान दो महिलाओं की बातचीत को संवाद के रूप में लिखिए।

उत्तर:

रचना - अलका बहन नमस्ते! कैसी हो?

अलका - नमस्ते रचना, मैं ठीक हूँ पर महँगाई ने दुखी कर दिया है।

रचना - ठीक कहती हो बहन, अब तो हर वस्तु के दाम आसमान छूने लगे हैं।

अलका - मेरे घर में तो नौकरी की बँधी-बधाई तनख्वाह आती है। इससे सारा बजट खराब हो गया है।

रचना - नौकरी क्या रोज़गार क्या, सभी परेशान हैं।

अलका - हद हो गई है कोई भी दाल एक सौ बीस रुपये किलो से नीचे नहीं है।

रचना - अब तो दाल-रोटी भी खाने को नहीं मिलने वाली।

अलका - बहन कल अस्सी रुपये किलो तोरी और साठ रुपये किलो टमाटर खरीदकर लाई। आटा, चीनी, दाल, चावल मसाले दूध सभी में आग लगी है।

रचना - फल ही कौन से सस्ते हैं। सौ रुपये प्रति किलो से कम कोई भी फल नहीं हैं। अब तो लगता है कि डाक टर जब लिखेगा तभी फल खाने को मिलेगा।

अलका - सरकार भी कुछ नहीं करती महँगाई कम करने के लिए। वैसे जनता की भलाई के दावे करती है। जमाखोरों पर कार्यवाही भी नहीं करती है।

रचना - नेतागण व्यापारियों से चुनाव में मोटा चंदा लेते हैं फिर सरकार बनाने पर कार्यवाही कैसे करे।

अलका - गरीबों को तो ऐसे ही पिसना होगा। इनके बारे में कोई नहीं सोचता।

प्रश्नः 2.

यमुना की दुर्दशा पर दो मित्रों की बातचीत को संवाद के रूप में लिखिए।

उत्तर:

अजय - नमस्कार भाई साहब, शायद आप दिल्ली के बाहर से आए हैं।

प्रताप - नमस्कार भाई, ठीक पहचाना तुमने, मैं हरियाणा से आया हूँ।

अजय - मैं भी अलवर से आया हूँ। तुम यहाँ कैसे?

प्रताप - दिल्ली आया था। सोचा सवेरे-सवेरे यमुना में स्नान कर लेता हूँ पर

अजय - कल मेरा यहाँ साक्षात्कार था और आज कुछ और काम था। मैं भी यहाँ स्नान के लिए आया था।

प्रताप - इतनी गंदी नदी में कैसे नहाया जाए?

अजय - मैंने भी यमुना का बड़ा नाम सुना था, पर यहाँ ती उसका उल्टा निकला।
प्रताप - इसका पानी तो काला पड़ गया है।
अजय - फैक्ट्रियों और घरों का पानी लाने वाले कई नाले इसमें मिल जाते हैं न।
प्रताप - देखो, वे सज्जन फूल मालाएँ और राख फेंककर पुण्य कमा रहे हैं।
अजय - इनके जैसे लोग ही तो नदियों को गंदा करते हैं।
प्रताप - सरकार को नदियों की सफ़ाई पर ध्यान देना चाहिए।
अजय - केवल सरकार को दोष देने से कुछ नहीं होने वाला। हमें खुद सुधरना होगा।
प्रताप - ठीक कहते हो। यदि सभी ऐसा सोचें तब न।
अजय - यहाँ की शीतल हवा से मन प्रसन्न हो गया। अब चलते हैं।
प्रताप - ठीक कहते हो। अब हमें चलना चाहिए।

प्रश्नः 3.
बढ़ती गरमी और कम होती वर्षा के बारे में दो मित्रों की बातचीत का संवाद-लेखन कीजिए।
उत्तर:
रवि - रमन, कैसे हो?
रमन - मत पूछ यार गरमी से बुरा हाल है।
रवि - गरमी इसलिए बढ़ गई है क्योंकि वर्षा भी तो नहीं हो रही है।
रमन - 24 जुलाई भी बीतने को है पर बादलों का नामोनिशान भी नहीं है।
रवि - मेरे दादा जी कह रहे थे, पहले इतनी गरमी नहीं पड़ती थी और तब वर्षा भी खूब हुआ करती थी।
रमन - ठीक कह रहे थे तुम्हारे दादा जी। तब धरती पर आबादी कम थी परंतु पेड़-पौधों की कमी न थी।
रवि - वर्षा और पेड़ पौधों का क्या संबंध?
रमन - पेड़-पौधे वर्षा लाने में बहुत सहायक हैं। जहाँ अधिक वन हैं वहाँ वर्षा भी खूब होती है। इससे गरमी अपने आप कम हो जाती है।
रवि - फिर तो हमें भी अपने आसपास खूब सारे पेड़-पौधे लगाने चाहिए।
रमन - और हरे-भरे पेड़ों को कटने से बचाना भी चाहिए।
रवि - इस गरमी के बाद वर्षा ऋतु में खूब पौधे लगाएँगे।
रमन - यही ठीक रहेगा।

शोर के कारण पढ़ाई में उत्पन्न हो रही बाधा पर दो छात्रों के मध्य हुए संवाद का लेखन कीजिए।
उत्तर:

नमन - नमस्कार अजय! कैसे हो?
रमन - नमस्कार नमन ! मैं ठीक हूँ। परीक्षा की तैयारी कैसी चल रही है?
नमन - रमन तैयारी कर तो रहा हूँ, पर अच्छी तरह नहीं हो पा रही है।
रमन - क्या बात है, तबीयत तो ठीक है ना।
नमन - तबीयत तो एक दम ठीक है पर .....
रमन - पर क्या?
नमन - मेरी कॉलोनी में दो धार्मिक स्थल है जिससे वहाँ शोर होता रहता है।
रमन - क्या लोगों की ज़्यादा भीड़-भाड़ होती है वहाँ ?
नमन - लोगों की भीड़ तो कम पर वहाँ तेज़ आवाज़ में लाउडस्पीकर बजता रहता है।
रमन - इस बारे में सोसायटी के लोग मिलकर पुजारी से बात क्यों नहीं करते हैं।
नमन - कई बार बात की पर लगता है, दोनों पुजारियों में जैसे लाउडस्पीकर बजाने की प्रतियोगिता हो रही है।
रमन - उन्हें बताओ कि रात दस बजे के बाद लाउडस्पीकर बजाने पर प्रतिबंध है।
नमन - अब तो लगता है कि उनके विरुद्ध थाने में शिकायत करनी पड़ेगी क्योंकि इसमें हमें नींद नहीं आती है और हमारे काम प्रभावित हो रहे हैं।
रमन - अवश्य, क्योंकि इसका संबंध सभी के स्वास्थ्य से है।

प्रश्नः 7.
अध्यापिका और गृहकार्य न करके आने वाले छात्र के बीच हुई बातचीत का संवाद लेखन कीजिए।
उत्तर:
अध्यापिका - मोनू, अब तुम अपनी कॉपी निकालकर तैयार रहो।
मोनू,- जी मैम।
अध्यापिका - जल्दी ढूढों, तुम्हारा नंबर आ गया है।
मोनू - मैम! लगता है कॉपी तो घर रह गई।
अध्यापिका - तुमने काम किया ही न होगा।
मोनू - नहीं मैम, काम तो किया था।
अध्यापिका - पिछले सप्ताह भी तो तुमने यही बहाना किया था।
मोनू - ध्यान आ गया मैम, कल मैं घरवालों के साथ एक विवाह-पार्टी में चला गया और रात में देर से लौटा था।
अध्यापिका - तो काम पूरा करके पार्टी में जाना था।
मोनू - सोचा था, मैम कि आकर कर लूँगा पर समय ही नहीं मिला।
अध्यापिका - तुम झूठ बोलना भी सीखते जा रहे हो। यह अच्छी बात नहीं। कल अपने पिता या माँ को

साथ लेकर आना।

मोनू - मैम एक आखिरी मौका दे दीजिए, प्लीज!

प्रश्नः 8.

वनों की अंधाधुंध कटाई पर चिंता प्रकट करते हुए दो मित्रों के मध्य हुए संवाद (बातचीत) को लिखिए।

उत्तर:

पुनीत - नमस्ते सुमित! कहाँ थे छुट्टियों में?

सुमित - नमस्ते पुनीत! इन छुट्टियों में मैं अपने नाना जी से मिलने चला गया था।

पुनीत - तुम्हारे नाना जी गाँव में रहते हैं क्या?

सुमित - हाँ पुनीत! वहाँ का हरा-भरा वातावरण छोड़कर आने को मन ही नहीं कर रहा था।

पुनीत - अच्छा रहा तुम हरे-भरे वातावरण का आनंद उठा आए।

सुमित - पुनीत, तुम दिल्ली में ही थे या कहीं गए थे।

पुनीत - मैं भी अपने चाचा के पास आगरा गया था।

सुमित - वहाँ ताजमहल देखकर बड़ा आनंद आया होगा न?

पुनीत - ताजमहल देखने के आनंद से अधिक दुख वहाँ कटते पेड़ों को देखकर हुआ। जहाँ कभी हरे-भरे पेड़ हुआ करते थे अब घर बनते जा रहे हैं।

सुमित - यहाँ दिल्ली से तो जैसे हरियाली गायब ही हो गई है।

पुनीत - कुछ लोग वनों को काटकर अब वहाँ रेत, सीमेंट, कंकरीट और लोहे के मकानों के जंगल खड़े करते जा रहे

सुमित - जलवायु परिवर्तन, बढ़ती गरमी, बाढ़ आना ये सब वनों के कटने के दुष्परिणाम हैं।

पुनीत - हमें लोगों को इसके प्रति जागरूक करना होगा ताकि वनों की कटाई रुक सके।

सुमित - तुम्हारे इस अभियान में मैं और मेरे मित्र भी साथ देंगे।

विद्यालय की सांस्कृतिक संस्था 'रंगमंच की सचिव' 'लतिका' की ओर से 'स्वरपरीक्षा' के लिए इच्छुक विद्यार्थियों को यथासमय उपस्थित रहने की सूचना लगभग 25-30 शब्दों में लिखिए। समय और स्थान का उल्लेख भी कीजिए।

सूचना

सरस्वती विद्या मंदिर, गुड़गांव

25 जुलाई, 2019

गायन कार्यक्रम हेतु 'स्वरपरीक्षा'

विद्यालय की सांस्कृतिक संस्था 'रंगमंच' द्वारा आप सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि 3 अगस्त, 2019 को गायन कार्यक्रम हेतु 'स्वरपरीक्षा' विद्यालय सभागार में दोपहर 1 : 00 बजे आयोजित की जाएगी। इच्छुक छात्र समय पर पहुँच जाएँ।

'रंगमंच' सचिव
लतिका

5. आप शांति विद्या निकेतन, प्रशांत विहार, दिल्ली की छात्रा ख़ुशी मेहरा हैं। विद्यालय में आपका परीक्षा प्रवेश-पत्र गुम हो गया है। इस विषय पर 20-से-30 शब्दों में सूचना लिखे।

सूचना

शांति विद्या निकेतन, प्रशांत विहार, दिल्ली

दिनांक - 24/07/2019

परीक्षा प्रवेश-पत्र गुम हो जाना

सभी को यह सूचित किया जाता है कि 22/07/2019 को विद्यालय के खेल परिसर में मेरा परीक्षा प्रवेश-पत्र गुम हो गया है। इस पर मेरी फोटो के साथ मेरा अनुक्रमांक 2367528 है। यदि यह किसी को भी मिले तो मुझे लौटाने की कृपा करें।

ख़ुशी मेहरा
कक्षा 10 A

6. विद्यालय में छुट्टी के दिनों में भी प्रातः काल में योग की अभ्यास कक्षाएँ चलने की सूचना देते हुए इच्छुक विद्यार्थियों द्वारा अपना नाम देने हेतु सूचना-पट्ट के लिए एक सूचना लगभग 30 शब्दों में लिखिए।

सूचना

जे. एस. टी. पब्लिक स्कूल, नई दिल्ली,

दिनांक - 26 जुलाई, 2019

प्रातः काल में योगाभ्यास कक्षा

आप सभी को सूचित किया जाता है कि विद्यालय में छुट्टी के दिनों में प्रातः काल में योग की अभ्यास कक्षाएँ चलाई जाएँगी। जो भी विद्यार्थी योगाभ्यास की कक्षाओं का लाभ उठाना चाहते हैं, वे अपना नाम अपने कक्षाध्यापक/कक्षाध्यापिका को दे सकते हैं। नाम देने की आखरी तारीख 30 जुलाई, 2019 है।

योगाभ्यास कार्यक्रम
स्थान - बास्केट बॉल मैदान

आप केंद्रीय विद्यालय जलवायु विहार दिल्ली की सांस्कृतिक इकाई के सचिव प्रत्यूष/प्रत्यूषा हैं। आपके विद्यालय में स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर देशभक्ति पूर्ण कविताओं का पाठ किया जाना है जिसमें शहर के प्रसिद्ध कवि पधार रहे हैं। इसमें छात्र-छात्राओं के अभिभावक भी सादर आमंत्रित हैं। इस संबंध में एक सूचना आलेखन कीजिए।

उत्तर:

केंद्रीय विद्यालय, जलवायु विहार, दिल्ली

सूचना

08 अगस्त, 20XX

कवि सम्मेलन का आयोजन

आपको यह जानकर अतीव हर्ष होगा कि लोगों में देशभक्ति भावना भरने करने के लिए विद्यालय परिसर में देशभक्ति पूर्ण कविता-पाठ का आयोजन किया जा रहा है जिसमें शहर के प्रसिद्ध कवियों को आमंत्रित किया गया है। कार्यक्रम इस प्रकार है—

दिनांक — 14 अगस्त

समय — सायं 7 बजे

स्थान — विद्यालय परिसर

कार्यक्रम में प्रवेश पास द्वारा ही दिया जाएगा। पास के लिए अधोहस्ताक्षरी से संपर्क करें।

प्रत्यूष

(सचिव)

सांस्कृतिक इकाई

प्रश्नः2.

गांधी जयंती के अवसर पर आपके विद्यालय ने स्वच्छता अभियान चलाने का निर्णय लिया है। इसके लिए सामने वाली बस्ती में साफ़-सफ़ाई करने के अलावा लोगों में स्वच्छता के प्रति जन-जागरूकता फैलाए जाने का निश्चय किया गया है। इसकी सूचना देते हुए एक सूचना आलेख तैयार कीजिए। आप अपने विद्यालय के हेड ब्वाय जयंत

उत्तर:

गौतमबुद्ध सीनियर सेकेंड्री स्कूल

गौतमबुद्ध नगर, उ०प्र०

सूचना

24 सितंबर 20XX

स्वच्छता के प्रति जागरूकता अभियान

सभी छात्रों को सूचित किया जाता है कि गांधी जयंती के शुभ अवसर पर उनके सपनों को साकार करने के लिए विद्यालय के सामने वाली बस्ती में सफ़ाई अभियान चलाने एवं वहाँ के लोगों को सफ़ाई के प्रति जागरूक करने का निर्णय लिया गया है। यह कार्यक्रम प्रातः 9 बजे से अपराह्न 12 बजे तक चलेगा। इच्छुक छात्र-छात्राएँ अपना नामांकन अधोहस्ताक्षरी के पास 28 सितंबर, 20XX तक अवश्य करा दें।

सत्कार सैनी

हेड ब्वाय

प्रश्नः 3.

आप टैगोर अपार्टमेंट टैगोर गार्डन दिल्ली के आर०डब्ल्यू०ए० के सचिव हैं। गांधी जयंती के शुभ अवसर पर आरडब्ल्यू०ए० के सदस्यों ने डॉक्टरों की देखरेख में रक्तदान शिविर का आयोजन किया है। इच्छुक व्यक्ति रक तदान हेतु सादर आमंत्रित हैं। इस संबंध में सूचना आलेख तैयार कीजिए।

उत्तर:

टैगोर अपार्टमेंट

टैगोर गार्डन, दिल्ली

सूचना

28 सितंबर, 20XX

रक्तदान शिविर का आयोजन

आप सभी को अत्यंत हर्ष के साथ सूचित किया जाता है कि 02 अक्टूबर अर्थात् गांधी जी की जयंती के शुभ अवसर पर अपार्टमेंट के सामुदायिक भवन में एक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया है। यह आयोजन दीनदयाल उपाध्याय हरिनगर अस्पताल के डॉक्टरों की देखरेख में किया जाएगा। रक्तदान के इच्छुक व्यक्ति 01 अक्टूबर, 20XX तक अधोहस्ताक्षरी के पास अवश्य नामांकन करवा दें।

आयोजन का दिन — 02 अक्टूबर, 20XX
समय — प्रातः 9 बजे से 5 बजे सायं
स्थान — सामुदायिक भवन, टैगोर गार्डन

पुलकित शर्मा
(सचिव)
आर०डब्ल्यू०ए० टैगोर गार्डन

प्रश्नः 4.

आपके विद्यालय में पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया जा रहा है जिसमें हर तरह की पुस्तकों पर 25% छूट दी जाएगी। ये पुस्तकें विभिन्न विषयों से संबंधित होंगी। इस संबंध में एक सूचना आलेखतैयार कीजिए। आप दसवींबी के छात्र गौतम शर्मा हैं।

उत्तर:

शालीमार बाग, दिल्ली

सूचना

12 फरवरी, 20XX

पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि विद्यालय प्रांगण में एक पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया जा रहा है। इसका उद्देश्य छात्रों को सस्ती दर पर पुस्तकें उपलब्ध कराने के अलावा पठन के प्रति रुचि उत्पन्न करना है। समय एवं अन्य विवरण इस प्रकार है—

दिनांक एवं समय — 18 फरवरी, 20XX
समय प्रातः 9 बजे से सायं 6 बजे तक
स्थान — विद्यालय प्रांगण
मुख्य आकर्षण — 25 प्रतिशत छूट एम०आर०पी० पर।

गौतम शर्मा
दसवीं-बी

*-निबंध-लेखन:-

डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम

संकेत बिंदु -

- प्रस्तावना
- शिक्षा-दीक्षा
- राष्ट्रपति डॉ कलाम
- सादा जीवन उच्च विचार निबंध-लेखन
- जीवन-परिचय
- मिसाइल मैन डॉ० कलाम
- सम्मान एवं अलंकरण
- उपसंहार

प्रस्तावना - भारत भूमि ऋषियों-मुनियों और अनेक कर्मवीरों की जन्मदात्री है। यहाँ अनेक महापुरुष पैदा हुए हैं तो देश का नाम शिखर तक ले जाने वाले वैज्ञानिक भी हुए हैं। इन्हीं में एक जाना-पहचाना नाम है- डॉ० ए०पा. ने० अब्दुल कलाम का जिन्होंने दो रूपों में राष्ट्र की सेवा की। एक तो वैज्ञानिक के रूप में और दूसरे राष्ट्रपति के रूप में। देश उन्हें मिसाइल मैन के नाम से जानता-पहचानता है।

जीवन-परिचय - डॉ० कलाम का जन्म 15 अक्टूबर, 1931 को तमिलनाडु राज्य के रामेश्वरम् नामक कस्बे में हुआ था। इनके पिता का नाम जैनुलाबदीन और माता का नाम अशियम्मा था। इनके पिता पढ़े-लिखे मध्यमवर्गीय व्यक्ति थे जो बहुत धनी न थे। इनकी माता आदर्श महिला थीं। इनके पिता और रामेश्वरम मंदिर के पुजारी में गहरी मित्रता थी, जिसका असर कलाम के जीवन पर भी पड़ा। इनके पिता रामेश्वरम् से धनुषकोडि तक आने-जाने के लिए तीर्थयात्रियों के लिए नौकाएँ बनवाने का कार्य किया करते थे।

शिक्षा-दीक्षा - डॉ० कलाम की प्रारंभिक शिक्षा तमिलनाडु में हुई। इसके बाद वे रामनाथपुरम् के श्वार्ज़ हाई स्कूल में भर्ती हुए। हायर सेकंडी की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पूरी करने के बाद इंटर की पढ़ाई के लिए सेंट जोसेफ कॉलेज में प्रवेश लिया। यहाँ चार साल तक पढ़ाई करने और बी०एस०सी० प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करने के बाद उन्होंने 'हिंदू पत्रिका' में विज्ञान से संबंधित लेख-लिखने लगे। उन्होंने एअरोनॉटिक्स इंजीनियरिंग में डिप्लोमा भी किया।

मिसाइल मैन डॉ० कलाम - डॉ० कलाम को अपने कैरियर की चिंता हुई। वे भारतीय वायुसेना में पायलट पद के लिए चुने गए पर साक्षात्कार में असफल रहे। इसके बाद वे वर्ष 1958 में रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन से जुड़ गए। उनकी पहली नियुक्ति हैदराबाद में हुई। वहाँ वे पाँच वर्षों तक अनुसंधान सहायक के रूप में कार्य करते रहे। उन्होंने यहाँ वर्ष 1980 तक कार्य किया और अंतरिक्ष विज्ञान को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया। उन्होंने अपने जीवन का अधिकांश भाग अनुसंधान को समर्पित कर दिया। परमाणु क्षेत्र में उनका योगदान भुलाया नहीं जा सकता है। उनके नेतृत्व में 1 मई, 1998 का प्रसिद्ध पोखरण परीक्षण किया गया। मिसाइल कार्यक्रम को नई ऊँचाई तक ले जाने के कारण उन्हें मिसाइल मैन कहा जाता है।

राष्ट्रपति डॉ० कलाम - भारत के गणराज्य में 25 जुलाई, 2002 को वह सुनहरा दिन आया, जब मिसाइल मैन के नाम से मशहूर डॉ० कलाम ने राष्ट्रपति का पद सुशोभित किया और इसी दिन पद एवं गोपनीयता की शपथ ली। यद्यपि उनका संबंध राजनीति की दुनिया से कोसों दूर था फिर भी संयोग और भाग्य के मेल से उन्होंने भारत के बारहवें राष्ट्रपति के रूप में इस पद को सुशोभित किया। उन्होंने राष्ट्रपति पद पर रहते हुए निष्पक्षता और पूरी निष्ठा से कार्य किया।

सम्मान एवं अलंकरण - डॉ० कलाम ने जिस परिश्रम से परमाणु एवं अंतरिक्ष कार्यक्रम को नई ऊँचाई तक पहुँचाया उसके लिए उन्हें देश के सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित एवं अलंकृत किया गया। उन्हें वर्ष 1981 में पद्म विभूषण एवं वर्ष 1990 में 'पद्म भूषण' से सम्मानित किया गया। 'भारत रत्न' से सम्मानित होने वाले वे देश के तीसरे वैज्ञानिक हैं।

सादा जीवन उच्च विचार - डॉ० कलाम पर गांधी जी के विचारों का प्रभाव था। वे सादगीपूर्वक रहते थे। उनके विचार अत्यंत उच्च कोटि के थे। वे बच्चों से लगाव रखते थे। वे विभिन्न स्कूलों में जाकर बच्चों का उत्साहवर्धन एवं मार्गदर्शन करते थे। वे आज का काम आज निपटाने में विश्वास रखते थे। बच्चों को प्यार करने वाले डॉ० कलाम की मृत्यु भी बच्चों के बीच सन् 2015 में उस समय हुई जब वे उनके बीच अपने अनुभव बाँट रहे थे।

उपसंहार - डॉ० कलाम अत्यंत निराभिमानी व्यक्ति थे। वे परिश्रमी और कर्तव्यनिष्ठ थे। एक वैज्ञानिक होने के साथ ही उन्होंने मिसाइल कार्यक्रम को नई ऊँचाई पर पहुँचाया तो राष्ट्रपति रहते हुए उन्होंने देश की प्रगति में भरपूर योगदान दिया। उनका जीवन हम भारतीयों के लिए प्रेरणा स्रोत है।

क्रिकेट का नया प्रारूप-ट्वेंटी-ट्वेंटी

संकेत बिंदु -

- प्रस्तावना
- टेस्ट क्रिकेट -
- टी-ट्वेंटी प्रारूप
- उपसंहार
- क्रिकेट के विभिन्न प्रारूप
- एक दिवसीय क्रिकेट
- टी-ट्वेंटी का रोमांच एवं सफलता

प्रस्तावना-यूँ तो मनुष्य का खेलों से बहुत ही पुराना नाता है, पर मनुष्य ने शायद ही कभी यह सोचा हो कि ये खेल एक दिन उसे यश, धन और प्रतिष्ठा दिलाने का साधन सिद्ध होंगे। जिन खेलों को वह मात्र मनोरंजन के लिए खेला करता था, वही खेल अब खराब नहीं नवाब बना रहे हैं। खेलों में आज लोकप्रियता के शिखर पर क्रिकेट का स्थान है। इसकी लोकप्रियता के कारण आज हर बच्चा क्रिकेट का खिलाड़ी बनना चाहता है। वर्तमान में क्रिकेट का ट्वेंटी-ट्वेंटी रूप बहुत ही लोकप्रिय है।

क्रिकेट के विभिन्न प्रारूप - भारत में क्रिकेट की शुरुआत अंग्रेज़ों के समय हुई। अंग्रेज़ों का यह राष्ट्रीय खेल था, जिसे वे अपने साथ यहाँ लाए। कालांतर में यह विभिन्न देशों में फैला। उस समय क्रिकेट को मुख्यतया टेस्ट क्रिकेट के रूप में खेलते थे। समय की व्यस्तता और रुचि में आए बदलाव के साथ ही क्रिकेट का प्रारूप बदलता गया। एक दिवसीय क्रिकेट और टी-ट्वेंटी इसका लोकप्रिय रूप है।

टेस्ट क्रिकेट - टेस्ट क्रिकेट पाँच दिनों तक खेला जाने वाला रूप है। इसमें पाँचों दिन 90-90 ओवर की प्रतिदिन गेंदबाजी की जाती है। दोनों टीमें दो-दो बार बल्लेबाज़ी करती हैं। विपक्षी टीम को दोबार आल आउट करना होता है। ऐसा ही दूसरी टीम करती है, परंतु प्राय; पाँच दिन तक मैच चलने के बाद भी खेल का परिणाम नहीं निकलता है और मैच ड्रा कर दिया जाता है। यह प्रारूप धीरे-धीरे अपनी लोकप्रियता खोता जा रहा है।

एक दिवसीय क्रिकेट - यह क्रिकेट का दूसरा प्रारूप है, जिसे एक दिन में एक सौ ओवर अर्थात छह सौ आधिकारिक गेंदें खेलकर पूरा किया जाता है। प्रत्येक टीम 50-50 ओवर खेलती है। पहले बल्लेबाज़ी करने वाली टीम जितने रन बनाती है उससे एक रन अधिक बनाकर दूसरी टीम को मैच जीतना होता

है। जो टीम ऐसा कर पाती है, वही विजयी होती है। यह क्रिकेट का बेहद रोमांचक प्रारूप है, जिसे दर्शक खूब पसंद करते हैं। एक ही दिन में प्रायः मैच का परिणाम निकलने और पूरा हो जाने के कारण क्रिकेट स्टेडियमों में दर्शकों की भीड़ देखने लायक होती है।

टी-ट्वेंटी प्रारूप- यह क्रिकेट का सर्वाधिक लोकप्रिय प्रारूप है जिसे चालीस ओवरों में पूरा कर लिया जाता है। प्रत्येक टीम बीस- . बीस ओवर खेलती है। इधर सात-आठ साल पहले ही शुरू हुए उस प्रारूप को फटाफट क्रिकेट कहा जाता है जिसकी लोकप्रियता ने अन्य प्रारूपों को पीछे छोड़ दिया है। यह प्रारूप अधिक रोमांचक एवं मनोरंजक है।

इसे देखकर दर्शकों का पूरा पैसा वसूल हो जाता है। यह क्रिकेट सामान्यतया सायं चार बजे के बाद ही शुरू होता है और आठ-साढ़े आठ बजे तक खत्म हो जाता है। इसमें परिणाम और मनोरंजन के लिए दर्शकों को पूरे दिन स्टेडियम में नहीं बैठना पड़ता है। भारत में शुरू हुई आई०पी०एल० लीग में इसी प्रारूप से खेला जाता है जो भविष्य के खिलाड़ियों के लिए एक नया प्लेटफॉर्म तथा नवोदित खिलाड़ियों के लिए कमाई का साधन बन गया है। अब तो आलम यह है कि इस प्रारूप में चार सौ से अधिक रन तक बन जाते हैं।

टी-ट्वेंटी का रोमांच एवं सफलता-क्रिकेट का यह नया प्रारूप अत्यंत रोमांचक है। 20 ओवरों के मैच में 200 से अधिक रन बन जाते हैं। ट्वेंटी-ट्वेंटी प्रारूप का रोमांच तब देखने को मिला जब युवराज ने अंग्रेज़ गेंदबाज़ किस ब्राड के एक ही ओवर में छह छक्कों को दर्शकों के बीच पहुँचा दिया। ताबड़तोड़ बल्लेबाज़ी ही इस प्रारूप की सफलता का रहस्य है। उपसंहार- हमारे देश में क्रिकेट अत्यंत लोकप्रिय है। खेल के इस नए प्रारूप ने इसे और भी लोकप्रिय बना दिया है। आस्ट्रेलियाई गेंदबाज़ शेनवान और सचिन तेंदुलकर की रिटायर्ड खिलाड़ियों की टीमों ने अमेरिका में तीन मैचों की सीरीज खेलकर दर्शकों की खूब वाह-वाही लूटी। क्रिकेट का यह नया प्रारूप टी-ट्वेंटी दिनोंदिन लोकप्रिय होता जा रहा है।

अनुशासन की समस्या

संकेत बिंदु -

- प्रस्तावना
- छात्र और अनुशासन
- अनुशासनहीनता के कारण
- उपसंहार
- अनुशासन की आवश्यकता
- प्रकृति में अनुशासन
- समाधान हेतु सुझाव

उपसंहार प्रस्तावना-'शासन' शब्द में 'अनु' उपसर्ग लगाने से अनुशासन शब्द बना है, जिसका अर्थ है- शासन के पीछे अनुगमन करना, शासन के पीछे चलना अर्थात समाज और राष्ट्र द्वारा बनाए गए नियमों का पालन करते हुए मर्यादित आचरण करना अनुशासन कहलाता है। अनुशासन का पालन करने वाले लोग ही समाज और राष्ट्र को उन्नति के पथ पर ले जाते हैं। इसी तरह अनुशासनहीन नागरिक ही किसी राष्ट्र के पतन का कारण बनते हैं।

अनुशासन की आवश्यकता- अनुशासन की आवश्यकता सभी उम्र के लोगों को जीवन में कदम-कदम पर होती है। छात्र जीवन, मानवजीवन की रीढ़ होता है। इस काल में सीखा हुआ ज्ञान और अपनाई हुई आदतें जीवन भर काम आती हैं। इस कारण छात्र जीवन में अनुशासन की आवश्यकता और भी बढ़ जाती है। अनुशासन के अभाव में छात्र प्रकृति प्रदत्त शक्तियों का न तो प्रयोग कर सकता है और न ही विद्यार्जन के अपने दायित्व का भली प्रकार निर्वाह कर सकता है। छात्र ही किसी देश का भविष्य होते हैं, अतः छात्रों का अनुशासनबद्ध रहना समाज और राष्ट्र के हित में होता है।

छात्र और अनुशासन - कुछ तो सरकारी नीतियाँ छात्रों को अनुशासनविमुख बना रही हैं और कुछ दिन-प्रतिदिन मानवीय मूल्यों में आती गिरावट छात्रों को अनुशासनहीन बना रही है। आठवीं कक्षा तक अनिवार्य रूप से उत्तीर्ण कर अगली कक्षा में भेजने की नीति के कारण छात्र पढ़ाई के अलावा अनुशासन से भी दूरी बना रहे हैं। इसके अलावा अनुशासन के मायने बदलने से भी छात्रों में अब पहले जैसा अनुशासन नहीं दिखता है। इस कारण प्रायः स्कूलों और कॉलेजों में हड़ताल, तोड़-फोड़, बात-बात पर रेल की पटरियों और सड़कों को बाधित कर यातायात रोकने का प्रयास करना आमबात होती जा रही है। छात्रों में मानवीय मूल्यों की कमी कल के समाज के लिए चिंता का विषय बनती जा रही है।

प्रकृति में अनुशासन-हम जिधर भी आँख उठाकर देखें, प्रकृति में उधर ही अनुशासन नज़र आता है। सूरज का प्रातःकाल उगना और सायंकाल छिपना न हीं भूलता। चंद्रमा अनुशासनबद्ध तरीके से पंद्रह दिनों में अपना पूर्ण आकार बिखेरता है और नियमानुसार अपनी चाँदनी लुटाना नहीं भूलता। तारे रात होते ही आकाश में दीप जलाना नहीं भूलते हैं। बादल समय पर वर्षा लाना नहीं भूलते तथा पेड़-पौधे समय आने पर फल-फूल देना नहीं भूलते हैं। इसी प्रकार प्रातः होने का अनुमान लगते ही मुर्गा हमें जगाना नहीं भूलता है। वर्षा, शरद, शिशिर, हेमंत, वसंत, ग्रीष्म ऋतुएँ बारी-बारी से आकर अपना सौंदर्य बिखराना नहीं भूलती हैं। इसी प्रकार धरती भी फ़सलों के रूप में हमें उपहार देना नहीं भूलती। प्रकृति के सारे क्रियाकलाप हमें अनुशासनबद्ध जीवन जीने के लिए प्रेरित करते हैं।

अनुशासनहीनता के कारण- छात्रों में अनुशासनहीनता का मुख्य कारण दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली है। यह प्रणाली रटने पर बल देती है। दस, बारह और पंद्रह साल तक शिक्षार्जन से प्राप्त डिग्रियाँ लेकर भी किसी कार्य में निपुण नहीं होता है। यह शिक्षा क्लर्क पैदा करती है। नैतिक शिक्षा और मानवीय मूल्यों के लिए शिक्षा में कोई स्थान नहीं है। छात्र भी 'येनकेन प्रकारेण' परीक्षा पास करना अपना कर्तव्य समझने लगे हैं।

अनुशासनहीनता का दूसरा महत्वपूर्ण कारण है- शिक्षकों द्वारा अपने दायित्व का सही ढंग से निर्वाह न करना। अब वे शिक्षक नहीं रहे जिनके बारे में यह कहा जाए -

गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागौ पाँय।
बलिहारी गुरु आपनो, जिन गोविंद दियो बताय॥

समाधान हेतु सुझाव-छात्रों में अनुशासनहीनता दूर करने के लिए सर्वप्रथम शिक्षा की प्रणाली और गुणवत्ता में सुधार किया जाना चाहिए। शिक्षा को रोजगारोन्मुख बनाया जाना चाहिए। शिक्षण की नई-नई तकनीक और विधियों को कक्षा कक्ष तक पहुँचाया जाना चाहिए। छात्रों के लिए खेलकूद और अन्य सुविधाएँ उपलब्ध कराई जानी चाहिए। इसके अलावा परीक्षा प्रणाली में सुधार करना चाहिए। छात्रों को नैतिक मूल्यपरक शिक्षा दी जानी चाहिए तथा अध्यापकों को अपने पढ़ाने का तरीका रोचक बनाना चाहिए।

उपसंहार- अनुशासनहीनता मनुष्य को विनाश के पथ पर अग्रसर करती है। छात्रों पर ही देश का भविष्य टिका है, अत: उन्हें अनुशासनप्रिय बनाया जाना चाहिए। हमें अनुशासन का पालन करने के लिए प्रकृति से सीख लेनी चाहिए।

भ्रष्टाचार

संकेत बिंदु -

- प्रस्तावना
- भ्रष्टाचार के कारण
- उपसंहार
- भ्रष्टाचार के विविध क्षेत्र एवं रूप
- भ्रष्टाचार दूर करने के उपाय

प्रस्तावना - भ्रष्टाचार दो शब्दों 'भ्रष्ट' और 'आचार' के मेल से बना है। 'भ्रष्ट' का अर्थ है- विचलित या अपने स्थान से गिरा हुआ तथा 'आचार' का अर्थ है-आचरण या व्यवहार अर्थात किसी व्यक्ति द्वारा अपनी गरिमा से गिरकर कर्तव्यों के विपरीत किया गया आचरण भ्रष्टाचार है। यह भ्रष्टाचार हमें विभिन्न स्थानों पर दिखाई देता है जिससे जन साधारण को दो-चार होना पड़ता है। आज लोक सेवक की परिधि में आने वाले विभिन्न कर्मचारी जैसे कि बाबू, अधिकारी आदि इसे बढ़ाने में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से उत्तरदायी हैं।

भ्रष्टाचार के विविधि क्षेत्र एवं रूप - भ्रष्टाचार का क्षेत्र बहुत ही व्यापक है। इसकी परिधि में विभिन्न सरकारी और अर्धसरकारी कार्यालय, राशन की सरकारी दुकानें, थाने और तरह-तरह की सरकारी अर्धसरकारी संस्थाएँ आती हैं। यहाँ नियुक्त बाबू व अधिकारी, प्रशासनिक अधिकारी, एजेंट, चपरासी, नेता आदि जनसाधारण का विभिन्न रूपों में शोषण करते हैं। इन कार्यालयों में कुछ लिए दिए बिना काम करवाना टेढ़ी खीर साबित होता है। लोगों के काम में तरह-तरह के अड़गे लगाए जाते हैं और सुविधा शुल्क लिए बिना काम नहीं होता है। भ्रष्टाचार के बाज़ार में यदि व्यक्ति के पास पैसा हो तो वह किसी को भी खरीद सकता है। यहाँ हर एक बिकने को तैयार है। बस कीमत अलग-अलग है। यह कीमत काम के अनुसार तय होती है। जैसा काम वैसा दाम। काम की जल्दबाज़ी और व्यक्ति की विवशता दाम बढ़ा देती है।

भ्रष्टाचार के विविध रूप हैं। इसका सबसे प्रचलित और जाना-पहचाना नाम और रूप है-रिश्वत। यह रिश्वत नकद, उपहार, सुविधा आदि रूपों में ली जाती है। आम बोलचाल में इसे घूस या सुविधा शुल्क के नाम से भी जाना जाता है। लोग चप्पलें घिसने से बचाने, समय नष्ट न करने तथा मानसिक परेशानी से बचने के लिए स्वेच्छा या मज़बूरी में रिश्वत देने के लिए तैयार हो जाते हैं।

भ्रष्टाचार का दूसरा रूप भाई-भतीजावाद के रूप में देखा जाता है। सक्षम अधिकारी अपने पद का दुरुपयोग करते हुए अपने चहेतों, रिश्तेदारों और सगे-संबंधियों को कोई सुविधा, लाभ या नौकरी देने के अलावा अन्य लाभ पहुँचाना भाई-भतीजावाद कहलाता है। ऐसा करने और कराने में आज के नेताओं को सबसे आगे रखा जा सकता है। इससे योग्य व्यक्तियों की अनदेखी होती है और वे लाभ पाने से वंचित रह जाते हैं।

कमीशनखोरी भी भ्रष्टाचार का अन्य रूप है। सरकारी परियोजनाओं, भवनों तथा अन्य सेवाओं का काम तो कमीशन दिए बिना मिल ही नहीं सकता है। जो जितना अधिक कमीशन देता है, काम का ठेका उसे मिलने की संभावना उतनी ही प्रबल हो जाती है। इन ठेकों और बड़े ठेकों में करोड़ों के वारे-न्यारे होते हैं। बोफोर्स घोटाला, बिहार का चारा घोटाला, टू जी स्पेक्ट्रम घोटाला, कॉमन वेल्थ घोटाला, मुंबई का आदर्श सोसायटी घोटाला तो मात्र कुछ नमूने हैं।

भ्रष्टाचार के कारण - समाज में दिन-प्रतिदिन भ्रष्टाचार का बोलबाला बढ़ता ही जा रहा है। इसके अनेक कारण हैं। भ्रष्टाचार के कारणों में महँगी होती शिक्षा और अनुचित तरीके से उत्तीर्ण होना है। जो छात्र महँगी शिक्षा प्राप्त कर नौकरियों में आते हैं, वे रिश्वत लेकर पिछले खर्च को पूरा कर लेना चाहते हैं। एक बार यह आदत पड़ जाने पर फिर आजीवन नहीं छूटती है। इसका अगला कारण हमारी लचर न्याय व्यवस्था है जिसमें पकड़े जाने पर कड़ी कार्यवाही न होने से दोषी व्यक्ति बच निकलता है और मुकदमे आदि में हुए खर्च को वसूलने के लिए रिश्वत की दर बढ़ा देता है। उसके अलावा लोगों में विलासितापूर्ण जीवनशैली दिखावे की प्रवृत्ति, जीवन मूल्यों का ह्रास और लोगों का चारित्रिक पतन भी भ्रष्टाचार बढ़ाने के लिए उत्तरदायी हैं।

भ्रष्टाचार दूर करने के उपाय - आज भ्रष्टाचार की जड़ें इतनी गहरी हो चुकी हैं कि इसे समूल नष्ट करना संभव नहीं है, फिर भी कठोर कदम उठाकर इस पर किसी सीमा तक अंकुश लगाया जा सकता है। भ्रष्टाचार रोकने का सबसे ठोस कदम है-जनांदोलन द्वारा जन जागरूकता फैलाना। समाज सेवी अन्ना हजारे और दिल्ली के मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल द्वारा उठाए गए ठोस कदमों से इस दिशा में काफ़ी सफलता मिली है। इसके अलावा इसे रोकने के लिए कठोर कानून बनाने की आवश्यकता है ताकि एक बार पकड़े जाने पर रिश्वतखोर किसी भी दशा में लचर कानून का फायदा उठाकर छूट न जाए।

उपसंहार- भ्रष्टाचार हमारे समाज में लगा धुन है जो देश की प्रगति के लिए बाधक है। इसे समूल उखाड़ फेंकने के लिए युवाओं को आगे आना चाहिए तथा रिश्वत न लेने-देने के लिए प्रतिज्ञा करनी चाहिए।

इसके अलावा लोगों को चारित्रिक बल एवं जीवनमूल्यों का ह्रास रोकते हुए रिश्वत नहीं लेना चाहिए। आइए हम सभी रिश्वत न लेने-देने की प्रतिज्ञा करते हैं।

जीवन में खेलकूद का महत्त्व

संकेत बिंदु -

- प्रस्तावना
- खेल बढ़ाते मानवीय गुण
- खेलों के लिए प्रोत्साहन
- खेलों से शारीरिक एवं मानसिक विकास
- खेल-एक आकर्षक कैरियर
- उपसंहार

प्रस्तावना - किसी समय कहा जाता था कि 'खेलोगे-कूदोगे बनोगे खराब, पढ़ी-लिखोगे बनोगे नवाब' परंतु यह उक्ति आज अपनी प्रासंगिकता एवं उपयोगिता पूर्णतया खो चुकी है। खेल हर आयु-वर्ग की आज आवश्यकता बन चुके हैं। पहले मनुष्य अपने दैनिक जीवन में शारीरिक परिश्रम वाली क्रियाएँ करता था, जिससे उसकी खेल-संबंधी आवश्यकताएँ पूरी हो जाती थीं, परंतु आज की दिनचर्या में खेलों की आवश्यकता एवं महत्ता और भी बढ़ गई है। अब तो डॉक्टर भी प्रातः खुली हवा में सैर करने, व्यायाम करने, योगा करने की सलाह देने लगे हैं।

खेलों से शारीरिक एवं मानसिक विकास - खेल प्रायः दो प्रकार के होते हैं-पहले वे जिन्हें खुले मैदानों में खेला जाता है और दूसरे वे जिन्हें घर में बैठकर खेला जाता है। इनमें पहले प्रकार के खेल; जैसे-क्रिकेट, हॉकी फुटबॉल, वालीबॉल, कुश्ती, घुड़सवारी, लंबी-ऊँची कूद, दौड़ आदि खेलों में शारीरिक गतिविधियाँ अधिक होती हैं। इन खेलों से हमारा शरीर पुष्ट होता है। इनसे मांसपेशियाँ और हड्डियाँ पुष्ट और मज़बूत बनती हैं, शरीर सुडौल बनता है। इससे शरीर की सभी इंद्रियाँ सक्रिय रहती हैं तथा रक्त संचार सुचारु बनता है।

इन खेलों को खेलने से शारीरिक श्रम अधिक करना पड़ता है, अतः खिलाड़ी गहरी-गहरी साँसें लेते हैं जिससे हमारे फेफड़ों में ऑक्सीजन अधिक मात्रा में आती है जिससे शरीर को ऊर्जा मिलती है और हमारा पाचन ठीक रहता है जिससे भूख अधिक लगती है और हमारे द्वारा खाया-पिया गया आसानी से

पच जाता है। इससे शरीर स्वस्थ और निरोग रहता है। इसके विपरीत खेल न खेलने वाले व्यक्ति की पाचन क्रिया ठीक न होने से वह अनेक बीमारियों से घिर जाता है। वह आलस्य अनुभव करता है, मोटापे का शिकार होता है और थोड़ा-सा भी काम करने, दौड़ने-भागने आदि से हाँफने लगता है। उसका स्वास्थ्य ठीक न होने से सब कुछ अच्छा होने से भी उसे कुछ अच्छा नहीं लगता है और निराशा तथा उदासी से घिर जाता है।

खेलों से मानसिक विकास भी होता है। शतरंज, लूडो, कैरम, ताश, वीडियोगेम जैसे खेल हमारी मानसिक क्षमता, चिंतन, सोच-विचार को बढ़ाते हैं जो हमारे जीवन के लिए उपयोगी सिद्ध होते हैं।

खेल बढ़ाते मानवीय गुण - खेल हमारे भीतर मानवीय गुणों को पैदा करते हैं तथा उनका विकास करते हैं। खेल एक ओर मित्रता और सद्व्यवहार को बढ़ावा देते हैं तो हमें हार-जीत को समभाव से ग्रहण करने की सीख देते हैं। यह भावना जीवन में सफलता पाने के लिए आवश्यक होती है। खेल हमारे भीतर त्वरित निर्णय लेने की क्षमता का विकास करते हैं। खेलों से ईमानदार बनने, परस्पर सहयोग करने, मिल-जुलकर रहने तथा त्याग करने की सीख देते हैं। इसके अलावा खेलों से हम अनुशासन, संगठन, साहस, विश्वास, आज्ञाकारिता, सहानुभूति, उदारता, आदि गुणों को खेल-ही-खेल में विकसित कर लेते हैं।

खेल एक आकर्षक कैरियर - खेल अब केवल खेलने-कूदने और स्वस्थ रहने का साधन ही नहीं रह गए हैं, बल्कि खेलों में एक आकर्षक कैरियर भी छिपा है। आज खेलों में अच्छा प्रदर्शन करके यश और नाम कमाया जा सकता है। सचिन तेंदुलकर, महेंद्र सिंह धोनी, युवराज, राहुल द्रविड़, कपिल देव, साइना नेहवाल, सानिया मिर्जा आदि की प्रसिद्धि और वैभव संपन्नता का कारण खेल ही है। खेलों से ही ये विश्व प्रसिद्ध बने हैं और अपार धन के स्वामी बने हैं। इसके अलावा विभिन्न खेलों में अच्छा प्रदर्शन करने के बाद एक समयोपरांत खेल प्रशिक्षक बनकर प्रशिक्षण केंद्र खोलकर नियमित आय अर्जित की जा सकती है।

खेलों के लिए प्रोत्साहन - खेलों में निरंतर उन्नत प्रदर्शन करने के लिए प्रोत्साहन और प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। प्रतियोगिताओं में विभिन्न प्रदेशों और देशों के खिलाड़ी भाग लेते हैं। इनके बीच पदक जीतने या स्थान हासिल करने के लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। यह प्रशिक्षण जितनी कम आयु से शुरू कर दिया जाए उतना ही अच्छा होता है। इसके लिए सरकार को जगह-जगह खेल प्रशिक्षण केंद्र खोलना चाहिए और ग्रामीण क्षेत्र के युवाओं को भी खेलों में अच्छा करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

उपसंहार-खेल जीवन के लिए बहुत ज़रूरी होते हैं। ये नाना प्रकार से मनुष्य को लाभ पहुँचाते हैं। खेल स्वास्थ्य के लिए हितकारी होने के साथ ही मानवीय मूल्यों का विकास करते हैं। हमें खेलों को खेल भावना से खेलना चाहिए, बदला लेने की नीयत से नहीं। हमें खेलों में भाग लेना चाहिए और बच्चों को खेलों में भाग लेने के लिए प्रेरित करना चाहिए। हम सभी को किसी-न-किसी एक खेल का भागीदार अवश्य बनना चाहिए।

मेरी अविस्मरणीय यात्रा

संकेत-बिंदु -

- प्रस्तावना
- यात्रा की अविस्मरणीय बातें
- उपसंहार
- यात्रा की तैयारी
- अविस्मरणीय होने के कारण

प्रस्तावना - मनुष्य आदिकाल से ही घुमंतू प्राणी रहा है। यह घुमंतूपन उसके स्वभाव का अंग बन चुका है। आदिकाल में मनुष्य अपने भोजन और आश्रय की तलाश में भटकता था तो बाद में अपनी बढ़ी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए। इनके अलावा यात्रा का एक और उद्देश्य है-मनोरंजन एवं ज्ञानवर्धन। कुछ लोग समय-समय पर इस तरह की यात्राएँ करना अपने व्यवहार में शामिल कर चुके हैं। ऐसी एक यात्रा करने का अवसर मुझे अपने परिवार के साथ मिला था। दिल्ली से वैष्णों देवी तक की गई इस यात्रा की यादें अविस्मरणीय बन गई हैं।

यात्रा की तैयारी - वैष्णों देवी की इस यात्रा के लिए मन में बड़ा उत्साह था। यह पहले से ही तय कर लिया गया था कि इस बार दशहरे की छुट्टियों में हमें वैष्णों देवी की यात्रा करना है। इसके लिए दो महीने पहले ही आरक्षण करवा लिया गया था। आरक्षण करवाते समय यह ध्यान रखा गया था कि हमारी यात्रा दिल्ली से सवेरे शुरू हो ताकि रास्ते के दृश्यों का आनंद उठाया जा सके। रास्ते में खाने के लिए आवश्यक खाद्य पदार्थ घर पर ही तैयार किए गए। चूँकि हमें सवेरे-सवेरे निकलना था, इसलिए कुछ गर्म कपड़ों के अलावा अन्य कपड़े एक-दो पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ टिकट, पहचान पत्र आदि दो-तीन सूटकेसों में यथास्थान रख लिए गए। शाम का खाना जल्दी खाकर हम अलार्म लगाकर सो गए ताकि जल्दी उठ सकें और रेलवे स्टेशन पहुँच सकें।

यात्रा की अविस्मरणीय बातें - दिल्ली से जम्मू और वैष्णों देवी की इस यात्रा में एक नहीं अनेक बातें अविस्मरणीय बन गई। हम सभी लगभग चार बजे नई दिल्ली से जम्मू जाने वाली ट्रेन के इंतजार में प्लेटफॉर्म संख्या 5 पर पहुँच गए। मैं सोचता था कि इतनी जल्दी प्लेटफॉर्म पर इक्का-दुक्का लोग ही होंगे पर मेरी यह धारणा गलत साबित हुई। प्लेटफार्म पर सैकड़ों लोग थे। हॉकर और वेंडर खाने-पीने की वस्तुएँ समोसे, छोले, पूरियाँ और सब्जी बनाने में व्यस्त थे। अखबार वाले अखबार बेच रहे थे। कुली ट्रेन आने का इंतज़ार कर रहे थे और कुछ लोग पुराने गत्ते बिछाए चद्दर ओढ़कर नींद का आनंद ले रहे थे।

ट्रेन आने की घोषणा होते ही प्लेटफार्म पर हलचल मच गई। यात्री और कुली सजग हो उठे तथा वेंडरों ने अपना-अपना सामान उठा लिया। ट्रेन आते ही पहले चढ़ने के चक्कर में धक्का-मुक्की होने लगी। दो-चार यात्री ही उस डिब्बे से उतरे पर चढ़ने वाले अधिक थे। हम लोग अपनी-अपनी सीट पर बैठ भी न पाए थे कि शोर उठा, 'जेब कट गई'। जिस यात्री की जेब कटी थी उसका पर्स और मोबाइल फ़ोन निकल चुका था। हमने अपनी-अपनी जेबें चेक किया, सब सही-सलामत था। आधे घंटे बाद ट्रेन अपने गंतव्य की ओर चल पड़ी। एक-डेढ़ घंटे चलने के बाद बाहर का दृश्य खिड़की से साफ़-साफ़ नज़र आने लगा। रेलवे लाइन के दोनों ओर दूर-दूर तक धरती ने हरी चादर बिछा दी थी। हरियाली का ऐसा नजारा दिल्ली में दुर्लभ था। ऐसी हरियाली घंटों देखने के बाद भी आँखें तृप्त होने का नाम नहीं ले रही थीं। हमारी ट्रेन आगे भागी जा रही थी और पेड़ पीछे की ओर। कभी-कभी जब बगल वाली पटरी से कोई ट्रेन गुज़रती तो लगता कि परदे पर कोई ट्रेन गुज़र रही थी।

ट्रेन में हमें नाश्ता और काफी मिल गई। दस बजे के आसपास अब खेतों में चरती गाएँ और अन्य जानवर नज़र आने लगे। उन्हें चराने वाले लड़के हमें देखकर हँसते, तालियाँ बजाते और हाथ हिलाते। सब कुछ मस्तिष्क की मेमोरी कार्ड में अंकित होता जा रहा था। लगभग एक बजे ट्रेन में ही हमें खाना दिया गया। खाना स्वादिष्ट था। हमने पेट भर खाया और जब नींद आने लगी तब सो गए। चक्की बैंक पहुँचने पर ही हमारी आँखें शोर सुनकर खुली कि बगल वाली सीट से कोई सूटकेस चुराने की कोशिश कर रहा था पर पकड़ा गया। कुछ और आगे बढ़ने पर पर्वतीय सौंदर्य देखकर आँखें तृप्त हो रही थीं। जम्मू पहुँचकर हम ट्रेन से उतरे और बस से कटरा गया। सीले रास्ते पर चलने का रोमांच हमें कभी नहीं भूलेगा। कटरा में रातभर आराम करने के बाद हम सवेरे तैयार होकर पैदल वैष्णों देवी के लिए चल पड़े और दो बजे वैष्णों देवी पहुंच गए।

अविस्मरणीय होने के कारण - इस यात्रा के अविस्मरणीय होने के कारण मेरी पहली रेल यात्रा, प्लेटफॉर्म का दृश्य, ट्रेन में चोरी, जेब काटने की घटना के अलावा प्राकृतिक दृश्य और पहाड़ों को निकट से देखकर

उनके नैसर्गिक सौंदर्य का आनंद उठाना था। पहाड़ आकार में इतने बड़े होते हैं, यह उनको देखकर जाना। पहाड़ी जलवायु और वहाँ के लोगों का परिश्रमपूर्ण जीवन का अनुभव मुझे सदैव याद रहेगा।

उपसंहार-मैं सोच भी नहीं सकता था कि हरे-भरे खेत इतने आकर्षक होंगे और ट्रेन की यह यात्रा इस तरह रोमांचक होगी। पहाड़ी सौंदर्य देखकर मन अभिभूत हो उठा। अब तो इसी प्रकार की कोई और यात्रा करने की उत्सुकता मन में बनी हुई है। इस यात्रा की यादें मुझे सदैव रोमांचित करती रहेंगी।

विज्ञान के वरदान

संकेत बिंदु -

- प्रस्तावना
- विज्ञान से हानियाँ
- उपसंहार
- विज्ञान के विभिन्न वरदान
- विज्ञान का विवेकपूर्ण उपयोग

प्रस्तावना - मानव जीवन को सरल और सुखमय बनाने में सबसे ज्यादा यदि किसी का योगदान है तो वह विज्ञान का है। विज्ञान ने कदम-कदम पर मानव जीवन में हस्तक्षेप किया है और मनुष्य को इतनी सुविधाएँ प्रदान की हैं कि मनुष्य विज्ञान के अधीन होकर रह गया है। विज्ञान ने धरती आकाश और जल क्षेत्र तीनों को प्रभावित किया है। धरती का तो शायद ही कोई कोई कोना हो जहाँ विज्ञान ने कदम न रखा हो। विज्ञान के कारण मनुष्य ने उन्नति की है। मानव जीवन में क्रांति लाने का श्रेय विज्ञान को है। आज जिधर भी नज़र डालें, विज्ञान का प्रभाव सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है।

विज्ञान के विभिन्न वरदान - विज्ञान ने मनुष्य को इतनी सुविधाएँ दी हैं कि वह मनुष्य के लिए कामधेनु बन गया है। सर्वप्रथम कृषि क्षेत्र को देखते हैं। यहाँ पूरी तरह से बदलाव का कारण विज्ञान है। अब किसान को न हल चलाने की ज़रूरत है और न सिंचाई के लिए बैलों के पीछे दौड़ लगाने की। उसे अब निराई के लिए खुरपी उठाने की ज़रूरत नहीं हैं और न कटाई के लिए हँसिया उठाने की और न उसे धूप में चलकर एड़ी का पसीना चोटी पर पहुँचाने की। विज्ञान की कृपा से अब उसके पास ट्रैक्टर, ट्यूबवेल, कीटनाशक, खरपतवार नाशक यंत्र और दवाएँ हैं तथा कटाई-मड़ाई के लिए हारवेस्ट है जिनसे वह हफ़्तों का काम घंटों में कर लेता है। इसके अलावा उन्नतिशील बीज, खाद और यंत्रों का आविष्कार विज्ञान के कारण ही संभव हो पाया है। पैदल और बैलगाड़ियों पर यात्रा करने वाले मनुष्य के पास

धरती, आकाश और जल पर चलने वाले द्रुतगामी साधन हैं जिनसे वह अपनी यात्रा को सरल, सुखद और मंगलमय ढंग से पूरा कर लेता है। विज्ञान के कारण अब आवागमन के साधनों से समय और श्रम दोनों बचने लगा है।।

अभी हरकारों और कबूतरों से संदेश भेजने वाला मनुष्य पत्रों की दुनिया से आगे बढ़कर रफ़्तार टेलीफ़ोन, ईमेल से होते मोबाइल तक आ पहुँचा है। जिस पत्र का जवाब आने में महीनों लगते थे और इलाज के लिए भेजा गया पैसा मरीज की मृत्यु और क्रिया कर्म के बाद मिलता था वही जवाब और पैसा अब हाथों हाथ मिलने लगा है। इतना ही नहीं अब तो बातें करते हुए व्यक्ति को हम देख भी सकते हैं। सरदी, गरमी और बरसात की मार झेलने वाले मनुष्य के पास अलग-अलग मौसम के कपड़े हैं। उसके पास हीटर और ब्लोअर हैं जो सरदी को उसके पास आने भी नहीं देते हैं। गरमी भगाने के लिए व्यक्ति के पास पंखे, कूलर और ए.सी. हैं। अब उसके यातायात के साधन भी वातानुकूलित हैं। वह जिन आरामदायी भवनों में रहता है, वे किसी स्वर्ग से कम नहीं हैं कच्चे घर और झोपड़ियों में सरदी, गरमी और वर्षा की मार झेलने की बातें गुज़रे ज़माने की बातें हो चुकी हैं।

चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में विज्ञान ने मनुष्य को नया जीवन दिया है। अब रोगों का इलाज ही नहीं, शरीर के खराब अंगों को बदलना बाएँ हाथ का काम हो गया है। रक्तदान और नेत्रदान जैसे मानवोचित कार्यों और विज्ञान के सहयोग से मनुष्य को नवजीवन मिल रहा है। एक्सरे, अल्ट्रासाउंड और एम.आर.आई. के माध्यम से रोगों की पहचान कर उनका यथोचित इलाज किया जा रहा है।

उपर्युक्त कुछ उदाहरण विज्ञान के वरदान के कुछ नमूने हैं। वास्तव में विज्ञान ने मनुष्य का कायाकल्प कर दिया है।

विज्ञान से हानियाँ -
विज्ञान के कारण मनुष्य को जहाँ अनेक लाभ हुआ है वहीं कुछ हानियाँ भी हैं। ये हानियाँ किसी सिक्के के दूसरे पहलू की भाँति हैं। विज्ञान की मदद से मनुष्य ने शत्रुओं से मुकाबला करने के लिए अनेक अस्त्र-शस्त्र प्रदान किए हैं। इनमें परमाणु बम जैसे घातक हथियार भी हैं। ये अस्त्र-शस्त्र गलत हाथों में पड़कर समूची मानवता के लिए खतरा बन सकते हैं। इसके अलावा विज्ञान ने मनुष्य को भ्रम से दूर किया है जिससे मोटापा, रक्तचाप, अपच जैसी बीमारियाँ उसे घेर रही हैं।

विज्ञान का विवेकपूर्ण उपयोग - किसी भी वस्तु का विवेकपूर्ण उपयोग ही लाभदायक होता है। ऐसी ही स्थिति विज्ञान की है। विज्ञान
द्वारा प्रदत्त चाकू का प्रयोग हम सब्जी काटने के लिए करते हैं या दूसरे की हत्या के लिए, यह हमारे

विवेक पर निर्भर करता है। यदि कोई विज्ञान का दुरुपयोग करता है तो यह विज्ञान का दोष नहीं है। विज्ञान का विवेकपूर्ण उपयोग ही मनुष्यता की भलाई जैसे कार्य करने में सहायक होगा।

उपसहार- विज्ञान ने हमारा जीवन नाना प्रकार से सुखमय बनाया है। हमें विज्ञान का ऋणी होना चाहिए, जिसने हमें आदिमानव की जंगली-जीवन शैली से ऊपर यहाँ तक पहुँचाया है। अब यह हमारा दायित्व बनता है कि हम विज्ञान को वरदान ही बना रहने दें। इसका दुरुपयोग कर इसे अभिशाप न बनाएँ। विज्ञान के वरदान बने रहने में मनुष्य, समाज, राष्ट्र और समूची मानवता की भलाई है।